



अधिकतम 24.0 डिग्री
न्यूनतम 6.0 डिग्री

जींद-कैथल न्यूज

रोहतक, रविवार, 30 नवंबर 2025

9 नृत्य, योग प्रदर्शन और समूह नृत्य से सभी दर्शकों...



9 हरियाणवी संस्कृति में गीता के महत्व का प्रदर्शन किया



खबर संक्षेप

लिफ्ट लेकर पिस्तौल के बल पर बाइक लूटी, केस जाँद। नरवाना नागरिक अस्पताल के निकट बीती रात दो युवकों ने पहले बाइक पर लिफ्ट ली, फिर पिस्तौल के बल पर बाइक को लूट लिया और फरार हो गए। शहर थाना नरवाना पुलिस ने शिकायत के आधार पर अज्ञात दो युवकों के खिलाफ लूट का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

कैथल: मारपीट में एक युवक घायल, केस दर्ज
कैथल : थाना सीवन क्षेत्र के गांव सैर में हुई मारपीट में एक युवक घायल हो गया। उसे अस्पताल में दाखिल करवाया गया है। गांव सैर के बलवान चंद ने थाना सीवन पुलिस को दी शिकायत में बताया कि 27 नवंबर को जब वह शाम के करीब 3:00 बजे गांव से जा रहा था तो 6 अज्ञात व्यक्तियों द्वारा उस पर लाठी, डंडे और गंडासियों से हमला करते हुए उसे घायल कर दिया।

अवैध रूप से रखे चटर पटर पटाखे बरामद
कैथल। थाना पुंडरी पुलिस द्वारा अवैध रूप से रखे चटर पटर पटाखे बरामद किए हैं। पुलिस प्रवक्ता ने बताया कि थाना पुंडरी पुलिस के एचसी विकास की टीम अपराध की रोकथाम के लिए गश्त दौरान ब्रह्मानंद चौक फतेहपुर पर मौजूद थी। जहां पर गुप्त जानकारी मिली कि निवासी विककी किराये पर चीमा कालोनी वार्ड नंबर 1 पुण्डरी निवासी नरेश के बाडा में अवैध रूप से पटाखा रखे हैं।

गांव ढूँढवा में मारपीट में एक व्यक्ति घायल
कैथल। कलायत खंड के गांव ढूँढवा में आपसी रंजिश को लेकर कोई मारपीट में एक व्यक्ति घायल हो गया। उसे अस्पताल में दाखिल करवाया। मारपीट में रॉड, डंडे और कुलहड़ियों का प्रयोग किया। ढूँढवा के राजेश ने थाना कलायत पुलिस को दी शिकायत में बताया कि आपसी रंजिश को लेकर 28 नवंबर को गांव के ही सुभाष आदि ने हमला कर दिया।

बाइक चोरी करने के दो आरोपित गिरफ्तार
जाँद। पुलिस ने अलग-अलग स्थानों से दो बाइक चोरी करने के दो आरोपितों को गिरफ्तार किया है। शहर थाना सफीदों प्रभारी दिनेश ने बताया कि शिव कालोनी निवासी नरेंद्र का बाइक गत 17 जुलाई को चोरी हो गया। पुलिस ने जांच को आगे बढ़ाया तो गांव डहौला निवासी रोहित का नाम सामने आया। पुलिस ने कार्रवाई करते हुए रोहित को काबू कर उसके कब्जे से बाइक को बरामद कर लिया।

कष्ट निवारण समिति की बैठक का आयोजन 5 को
जाँद। नगरधीश मनिंका रानी ने बताया कि जिला परिवेदना कष्ट निवारण समिति की मासिक बैठक का हुआ आयोजन पांच दिसेंबर को सुबह 10 बजे होगा। डीआरडीए के सभागार में होने वाली इस बैठक की अध्यक्षता जिला कष्ट निवारण समिति के चेयरमैन एवं हरियाणा के शिक्षा एवं संसदीय कार्य मंत्री महिपाल दांडा करेंगे।

धान के अवशेष जलाने पर मामला दर्ज
जाँद। धान के अवशेष जलाने के आरोप में जुलाना थाना पुलिस ने किसान सतबीर के खिलाफ मामला दर्ज किया है। विभाग ने किसान पर पांच हजार रुपये जुर्माना भी लगाया है। कृषि विभाग की टीम को 22 नवंबर को सूचना मिली थी कि मालवी गांव के खेतों में धान के अवशेषों में आग लगी हुई है।

हजारों रुपये का कैमरे का सामान चोरी, केस कैथल
कैथल। कैथल के गोल्ड पाम पैलेस के निकट से चोर कैमरों का सामान चुरा कर ले गए। कुलवंतनगर के मुकेश ने सिविल लाइन कैथल पुलिस को दी शिकायत में बताया कि वह गोल्डन पाम पैलेस कैथल के निकट कैमरे की दुकान करता है। आरोप है कि चोर 22 नवंबर को हजारों रुपये का कैमरे का सामान चुरा कर ले गए।

नगरों के राजकीय स्कूल में सूखे पेड़ दे रहे हादसे को दावत, शिक्षा विभाग मौन

हरिभूमि न्यूज ▶▶ अलेवा

नगरों गांव के राजकीय संस्कृति माडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में खड़े व झुके सूखे पेड़ हादसों को दावत दे रहे हैं लेकिन शिक्षा विभाग तथा जिला प्रशासन अभी तक मौन है। गांव के लोगों में विभाग की इस कार्यप्रणाली को लेकर रोष है। नगरों गांव के भीम सिंह, मनोज, विकास, प्रवीण तथा महावीर ने बताया कि गांव के राजकीय संस्कृति माडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में काफी समय से आठ से 10 सूखे व झुके पेड़ खड़े हुए हैं। इन पेड़ों के नीचे बच्चे बैठकर शिक्षा ग्रहण भी कर रहे

सूखे पेड़ों से स्कूल के विद्यार्थियों को खतरा, जिम्मेदार बेखबर, ग्रामीणों में विभागीय कार्यप्रणाली पर रोष



अलेवा। राजकीय संस्कृति माडल वमावि में सूखे पेड़ के नीचे बैठकर पढ़ते बच्चे।

हैं। पेड़ झुके होने के अलावा उनकी हालत इतनी खराब है कि वह कभी गिर कर बच्चों को चोटिल कर सकते हैं। गांव के लोग मामले की सूचना अनेक बार शिक्षा विभाग के अधिकारियों को दे चुके हैं लेकिन



अलेवा। राजकीय संस्कृति माडल वमावि में हादसों को न्योता देता सूखा पेड़।

अधिकारी समस्या का समाधान करने की बजाए किसी बड़ हादसे के इंतजार में है। ग्रामीणों ने बताया कि

स्कूल संचालन के समय अगर पेड़ गिर जाते हैं तो इससे बहुत बड़ा खतरा बच्चों की जान के रूप में हो

सोमवार को लिखा जाएगा पत्र

राजकीय संस्कृति माडल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के प्राचार्य बिजेन्द्र ने बताया कि मामला उनके खंडान में है। इसके लिए सोमवार को वन विभाग को पत्र लिखा जाएगा। स्कूल में खड़े सूखे पेड़ वास्तव में बच्चों के लिए खतरा है। वन विभाग को पत्र लिखकर उनको तुरंत प्रभाव से स्कूल से हटवाने की मांग की जाएगी।

सकता है। खराब मौसम में बच्चों के लिए बन सकते हैं खतरा: बरसात व तेज हवा के कारण इन पेड़ों के गिरने का खतरा और अधिक बढ़ जाता है। बच्चों को रोजाना इन पेड़ों के नीचे बैठकर पढ़ना पड़ता है। जिससे उनकी जान खतरों में बनी

रहती है। अभिभावकों ने सरकार व विभाग से मांग की कि जल्द से जल्द स्कूल में खड़े सूखे पेड़ों को हटाया जाए ताकि बच्चों की जान जोखिम में न आए। गांव वालों का कहना है कि यदि समय रहते कार्रवाई नहीं की तो कोई बड़ी अनहोनी हो सकती है।

ग्रामीणों में पनप रहा रोष, संबंधित अधिकारी मौन

करोड़ों खर्च के बावजूद भी नहरी पानी को तरसे 4 गांव

प्रदेश सरकार द्वारा बिछाई पाइपलाइन भी नहीं बुझा पाई लोगों की प्यास



हरिभूमि न्यूज ▶▶ अलेवा

प्रदेश सरकार द्वारा पिछले कई वर्षों से बधाना, नगरों, गोहिया तथा रायचंदवाला गांव के लोगों को नहरी पानी उपलब्ध करवाने को लेकर करोड़ों रुपये खर्च कर पाइप लाइन तो बिछा दी, लेकिन गांव के जलघरों को नहरी पानी उपलब्ध नहीं करवा सके। जिसके कारण गांव के लोगों में जिला प्रशासन तथा प्रदेश सरकार के खिलाफ रोष है। गांवों के जलघरों में नहरी पानी की एक बूंद भी नहीं आ रही है। जिसके कारण बधाना, नगरों समेत चार गांवों के लोगों में सरकार तथा जिला प्रशासन के प्रति रोष है। बधाना, नगरों समेत चार गांवों के मनफूल, बलवान, महावीर, रामकरण, विकास, जोगिंद्र, जगदीश, सतबीर आदि ने बताया कि प्रदेश सरकार ने



सूखे पड़े पानी के टैंक.....

बधाना, नगरों समेत चार गांवों के लोगों को नहरी पानी उपलब्ध करवाने को लेकर जाँद नहर से जलघरों तक पाइप लाइन को बिछा दी, लेकिन गांव के जलघरों को नहरी पानी उपलब्ध नहीं करवा सके। जिसके कारण गांव के लोगों में जिला प्रशासन तथा प्रदेश सरकार के खिलाफ रोष है। गांवों के जलघरों में नहरी पानी की एक बूंद भी नहीं आ रही है। जिसके कारण बधाना, नगरों समेत चार गांवों के लोगों में सरकार तथा जिला प्रशासन के प्रति रोष है। बधाना, नगरों समेत चार गांवों के मनफूल, बलवान, महावीर, रामकरण, विकास, जोगिंद्र, जगदीश, सतबीर आदि ने बताया कि प्रदेश सरकार ने

सात दिनों में उक्त चार गांवों के जलघरों तक नहरी पानी नहीं पहुंच पाता है। जिससे पीछे से नहरी पानी उपलब्ध न होने के कारण ग्रामीणों को पीने के पानी के लिए कई-कई महिने इंतजार करना पड़ता है।

बधाना गांव के लोगों ने तो स्थानीय विधायक तक को भाखड़ा नहर से पीने के पानी की पाइप लाइन बिछवाने की मांग की है ताकि गांवों के लोगों को पीने के पानी के नाम पर नहरी पानी उपलब्ध हो सके।

सफाई करवाई जाएगी

ठेकेदार विरेंद्र ने बताया कि पहली बात तो जाँद नहर 45 दिनों में एक बार ही आती और सात दिन चलती है लेकिन पिछले कुछ दिनों से बिछाई पाइप लाइन की सफाई नहीं हो रही है। अब वे दिनों में मजदूरों को लगाकर होव आदि की सफाई करवावाई जाएगी। उसके बाद अगली बार नहर में पानी आने के बाद जलघरों तक नहरी पानी पहुंचाया जाएगा।

45 दिनों में आता है नहर में पानी

गांवों के लोगों का कहना है कि जब उक्त गांवों के लोगों को नहरी पानी उपलब्ध करवाना हो नहीं था तो फिर करोड़ों रुपये खर्च कर पाइप लाइन क्यों बिछाई। जाँद नहर से बिछाई पाइप लाइन पर चार जलघर पड़ते हैं तथा जाँद नहर में 45 दिनों में एक बार पानी आता है और सात दिनों तक चलती है।

नया में सरेशाम चल रहा भ्रष्टाचार का खेल कंटेनर की टक्कर से बाइक सवार की मौत

जांच करने के नाम पर एसडीएम कार्यालय में धूल फांक रही शिकायतें

हरिभूमि न्यूज ▶▶ गुहला-चीका

भ्रष्टाचार के खिलाफ कोई शिकायत करे तो कहाँ करे। कुछ ऐसा ही यक्ष प्रश्न हलका गुहला से सामने आ रहा है। यहां चीका के सोमनाथ ने नया में भ्रष्टाचार के खिलाफ मुख्य सचिव को की शिकायत भी दम तोड़ती नजर आ रही है क्योंकि शिकायत के बावजूद भ्रष्टाचार का गंभीर आरोप सामने आया है। आरोप कि कई ऐसे स्थानों पर निर्माण कार्य दिखाकर बिल तैयार कर दिए गए, जहां वास्तव में कोई गली बनी ही नहीं। इन फर्जी बिलों के माध्यम से नगर पालिका प्रशासन द्वारा बड़े पैमाने पर सरकारी धन का दुरुपयोग किए जाने की आशंका जताई जा रही है। सूत्रों के अनुसार, इस मामले में कई लोगों ने लिखित शिकायतें उच्च अधिकारियों को सौंपी हैं, लेकिन उन शिकायतों पर अपेक्षित कार्रवाई नहीं की। आरोप है कि नगर पालिका प्रशासन शिकायतों को दबाने का प्रयास कर रहा है। वहीं, वार्ड नंबर 13 के करीब एक माह पहले विजिलेंस विभाग में लिखित शिकायत, जिसकी जांच विजिलेंस टीम द्वारा जांच नहीं की गई।

शिकायत संज्ञान में नहीं

गुहला के एसडीएम कैप्टन प्रमेश सिंह ने बताया कि वे इस प्रकार की कोई शिकायत उनके खंडान में नहीं हैं। वे पिछले एक सप्ताह से अवकाश पर हैं। विकास से संबंधित शिकायत डीएसओ को मार्क हो सकती है। वहीं दूसरी ओर शिकारकर्ता ने बताया कि एसडीएम कार्यालय द्वारा उन्हें दो बार फूलांड के लिए बुलाया गया है।

दी थी। आरोप है कि एसडीएम कार्यालय जांच को जानबूझकर कई महिनों से दबा कर रखा हुआ है ताकि खुशीराम ठेकेदार के द्वारा किए गए फर्जी बाड़े को छुपाया जा सके। नया प्रशासन पर फर्जी गलियां बना करोड़ों के बिल पास करवाने का गंभीर आरोप सामने आया है। आरोप कि कई ऐसे स्थानों पर निर्माण कार्य दिखाकर बिल तैयार कर दिए गए, जहां वास्तव में कोई गली बनी ही नहीं। इन फर्जी बिलों के माध्यम से नगर पालिका प्रशासन द्वारा बड़े पैमाने पर सरकारी धन का दुरुपयोग किए जाने की आशंका जताई जा रही है। सूत्रों के अनुसार, इस मामले में कई लोगों ने लिखित शिकायतें उच्च अधिकारियों को सौंपी हैं, लेकिन उन शिकायतों पर अपेक्षित कार्रवाई नहीं की। आरोप है कि नगर पालिका प्रशासन शिकायतों को दबाने का प्रयास कर रहा है। वहीं, वार्ड नंबर 13 के करीब एक माह पहले विजिलेंस विभाग में लिखित शिकायत, जिसकी जांच विजिलेंस टीम द्वारा जांच नहीं की गई।

गांव शाहपुर के निकट जाँद-कैथल मार्ग पर हुआ हादसा

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जाँद

शाहपुर के निकट जाँद-कैथल मार्ग पर तेजपत्तार कंटेनर की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत हो गई। सदर थाना पुलिस ने मृतक के चचेरे भाई की शिकायत पर चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। डहौला निवासी संदीप (25) बाइक पर सवार होकर जाँद से बाइक पर सवार होकर अपने गांव जा रहा था। गांव शाहपुर ने निकलते ही सामने से आ रहे तेजपत्तार कंटेनर ने उसकी बाइक को टक्कर मार दी। जिसमें संदीप गंभीर रूप से



जाँद। मृतक के शव का पोस्टमार्टम करवाने आए परिजन। फोटो: हरिभूमि

घायल हो गया। संदीप के पीछे चल रहे उसके चचेरे भाई ने राहगीरों के सहयोग से उसे नागरिक अस्पताल पहुंचाया। जहां पर चिकित्सकों ने संदीप को मृत घोषित कर दिया। घटना की सूचना पाकर सदर थाना पुलिस मौके पर पहुंच और हालातों का जायजा लिया। सदर थाना पुलिस ने मृतक के चचेरे भाई विनोद को शिकायत पर कंटेनर चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर शव का पोस्टमार्टम करा परिजनों को सौंप दिया है। जांच अधिकारी टिंकू ने बताया कि मृतक खेती बाड़ी करता था। इसमें अनुयाय शहर में लगभग 100 रंगीन कंकरीट बैच स्थापित करने का जायजा लिया। सदर थाना

सड़क दुर्घटना में व्यक्ति की मौत

जाँद। गतली गांव में प्लाइओवर के पास एक सड़क दुर्घटना में व्यक्ति की मौत हो गई। जुलाना थाना पुलिस ने अज्ञात वाहन चालक के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। फतेहाबाद के रतिया बिल्डर्स 43 वर्षीय कृष्ण जाँद में ही घटित मिल्डर प्लांट के पास रहता था। वह शहरियों में हलवाई का काम करता था। शुक्रवार को वह रोहतक किसी शॉपी सेंटरों में काम करने के लिए गया था। रात को लगभग आठ बजे वह तथा उसके कुछ साथी आटो में सवार होकर जाँद आ रहे थे। जब यह लोग गतली प्लाइओवर के पास पहुंचे तो इनकी आटो चक्कर हो गई। कृष्ण जब आटो से नीचे उतरा तो पीछे से आ रहे एक वाहन ने उसके टक्कर मार दी। इसमें कृष्ण की मौत पर ही मौत हो गई। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवा कर परिजनों को सौंप दिया।

स्वेच्छिक सेवानिवृत्ति लेने के बाद एक चिकित्सक पर आया भार नागरिक अस्पताल को ईएनटी चिकित्सक की दरकार

हरिभूमि न्यूज ▶▶ जाँद

जिला मुख्यालय स्थित नागरिक अस्पताल को एक ईएनटी चिकित्सक की तुरंत प्रभाव से दरकार है। हालांकि अस्पताल में ईएनटी विशेषज्ञ डा. अरविंद हैं लेकिन उन पर प्रशासनिक भार अत्यधिक होने के चलते नाक, कान, गले के मरीजों को ज्यादा समय नहीं दे पाते हैं। ऐसे में मरीजों की परेशानी बढ़ गई है। डा. अरविंद पर ही गला, नाक और कान से संबंधित मरीजों का भार आ गया है। अस्पतालप्रशासन ने ईएनटी



जाँद। नागरिक अस्पताल में दवा के लिए लगी लाइन। फोटो: हरिभूमि

विशेषज्ञ उपलब्ध करवाने के लिए स्वास्थ्य निदेशालय को पत्र लिख दिया है लेकिन अभी तक अस्पताल को ईएनटी विशेषज्ञ मिला नहीं है। डा. बुजेंद्र घणघस के जाने के बाद नही मिला नया ईएनटी चिकित्सक नागरिक अस्पताल में ईएनटी डा. बुजेंद्र घणघस ने लगभग छह माह

निदेशालय को पत्र लिखा

नागरिक अस्पताल के प्रधान चिकित्सक अधिकारी डा. रघुवीर पुनिया ने बताया कि अस्पताल में ईएनटी चिकित्सकों के लिए निदेशालय को पत्र लिख दिया गया है। मरीजों को परेशानी नहीं आने दी जा रही है। डा. अरविंद जो पीडी के साथ-साथ प्रशासनिक कार्य भी देख रहे हैं।

पहले वीआरएस ले ली थी। जब डा. बुजेंद्र अस्पताल में कार्यरत थे तो वो अकेले 250 मरीजों की ओपीडी करते थे और साथ ही आप्रेशन भी करते थे। तब से लेकर अबतक अस्पताल को ईएनटी का नया चिकित्सक नहीं मिला है। अस्पताल में प्रतिदिन से 250 से 300 मरीज नाक, कान, गले के आते हैं। अस्पताल के पास ईएनटी विशेषज्ञ

निरदेशालय को पत्र लिखा

डा. अरविंद हैं लेकिन उनके पास प्रशासनिक कार्य बहुत ज्यादा है। डा. अरविंद एसएमओ का काम भी देखरेख रहे हैं और साथ ही ओपीडी भी कर रहे हैं लेकिन वो इतनी ओपीडी नहीं देख पाते हैं, जिनकी संख्या में मरीज आते हैं। जब तक ईएनटी के नए चिकित्सक नहीं आ जाते, तब तक मरीजों को परेशानी उठानी पड़ेगी।



बैच स्थापित करवाने के अभियान में शामिल पार्षद रेणु धानियां व वार्ड के लोग।

सार्वजनिक स्थानों की शोभा बढ़ाएं रंगीन कंकरीट बैच

कलायत। कलायत नया शहर के सौंदर्यकरण और जन सुविधा को ध्यान में रखते हुए बड़े स्तर पर रंगीन कंकरीट बैच स्थापित करने का अभियान तेज कर रखा है। शहर के 16 वार्डों में इन बैचों को स्थापित करने का कार्य एजेंसी के माध्यम से किया जा रहा है। नगर पालिका का मानना है कि इससे न सिर्फ शहर की सुंदरता में वृद्धि होगी बल्कि राहगीरों, बुजुर्गों और बाजार आने-जाने वाले लोगों को बैठने के लिए उचित व्यवस्था भी मिलेगी। 2025 के निकाय आम चुनाव के बाद नगर पालिका प्रधान अंकित राणा और विभिन्न वार्डों के पार्षदों ने संयुक्त रूप से बैचों का प्रस्ताव पालिका सदन में सर्वसम्मति से पारित किया था। इसके अनुसार शहर में लगभग 100 रंगीन कंकरीट बैच स्थापित करने का काम किया जा रहा है। नया प्रधान व पार्षदों का कहना है कि अभियान में मुख्य मार्गों, पार्कों, बाजार क्षेत्रों और सार्वजनिक स्थानों को प्राथमिकता दी जा रही है।



नवंबर में जरूरी कामों को निपटाएं, 1 दिसंबर से नियम बदलेंगे

नवंबर महीना जल्द खत्म होने वाला है और कई सरकारी और वित्तीय कामों की आखिरी तारीख भी पास आ गई है। अगर आपने अभी तक ये काम पूरे नहीं किए हैं, तो 30 नवंबर से पहले पूरा कर लें। दिसंबर से कई नियम बदल जाएंगे।

सरकारी कर्मचारियों के लिए यूपीएस चुनने की आखिरी तारीख

सरकारी कर्मचारियों के लिए यूपीएस पंशन स्कीम चुनने की डेडलाइन 30 नवंबर है। पहले यह तारीख 30 सितंबर थी, लेकिन बाद में बढ़ा दी गई। यूपीएस, एनपीएस से अलग है और इसे चुनने का मौका सीमित समय तक ही है।

पेंशनर्स के लिए लाइफ सर्टिफिकेट जमा करने की डेडलाइन

पेंशनर्स को अपना लाइफ सर्टिफिकेट 30 नवंबर तक जमा करना होगा। इसे समय पर जमा न कराने पर पेंशन रोकने का खतरा हो सकता है।

टैक्स फाइलिंग और जरूरी रिपोर्ट

अक्टूबर 2025 में टीडीएस कटने वाले टैक्सपेयर्स को सेक्शन 194-ए, 194-बी, 194एम और 194एस के तहत बयान 30 नवंबर तक जमा करना अनिवार्य है। सेक्शन 92ई के तहत रिपोर्ट देने वाले टैक्सपेयर्स भी 30 नवंबर तक आईटीआर फाइल कर सकते हैं। अंतरराष्ट्रीय ग्रुप की कॉन्स्ट्रिब्यूट एंटीटीज के लिए फॉर्म 3सीईए जमा करने की आखिरी तारीख भी यही है।

एलपीजी सिलेंडर की कीमत में बदलाव

ऑयल मार्केटिंग कंपनियों हर महीने की पहली तारीख को एलपीजी की कीमतें अपडेट करती हैं। 1 दिसंबर को भी नए दाम लागू होंगे। 1 नवंबर को 19 किलो वाले कॉमर्शियल सिलेंडर की कीमत 6.50 रुपए तक घटाई गई थी।

एविएशन टरबाइन फ्यूल की कीमत

एलपीजी की तरह एटीएफ की कीमतों में भी हर महीने बदलाव होता है। 1 दिसंबर को एटीएफ के दाम बढ़ सकते हैं या कम हो सकते हैं। नवंबर खत्म होने से पहले इन जरूरी कामों को पूरा करना बेहद जरूरी है, क्योंकि 1 दिसंबर से नियम और तारीखें बदल जाएंगी।



निवेश मंत्रा विनोद गौतम

दरअसल अनिश्चितता से भरे शेयर ट्रेडिंग में भावों के उतार-चढ़ाव को समझना ही सबसे बड़ी चुनौती होती है। जो ट्रेडर यह समझते हैं कि मुनाफा कमाना बड़ा लक्ष्य है, वे अक्सर घाटा खाते हैं, जबकि भावों की भाषा को पढ़ने वाले कुल मिलाकर फायदे में रहते हैं, क्योंकि किसी भी शेयर के भावों में ही छिपा रहता है उसका भूत, वर्तमान और भविष्य, बस इसे पढ़ने के लिए सधी और पैनी नजर चाहिए। अब सवाल है कि भावों की भाषा पढ़ी कैसे जाए। इसका एक प्रमुख माध्यम है टेक्निकल एनालिसिस।

टेक्निकल एनालिसिस का क्या है अर्थ

टेक्निकल एनालिसिस का अर्थ है किसी स्टॉक के मार्केट डाटा का सूक्ष्म अध्ययन करके उसकी संभावित कीमत का अनुमान लगाना। इसमें मुख्य रूप से दो बातों पर गौर किया जाता है। भाव और ट्रेडिंग की मात्रा यानी वॉल्यूम। सरल शब्दों में कहा जाए तो टेक्निकल एनालिसिस के तहत देखा जाता है कि किसी खास समय अवधि में किसी स्टॉक की कीमत में कितना उतार-चढ़ाव आया। इस अवधि में इसकी ट्रेड की गई संख्या में क्या कभी कोई बड़ा उतार चढ़ाव देखने को मिल रहा है।

स्टॉक मार्केट की नब्ब पकड़ना नहीं आसान, इन बातों का रखें विशेष ध्यान



नियमित व अनुशासित निवेश ही करें

इतिवर्ती मार्केट में निवेश एक अनुशासन है। इसे तोड़ने पर जोखिम उठाना पड़ सकता है। लेकिन यह देखा गया है कि निवेश के फंडमेंटलों में अपवाद को नियम मान लेने की वृत्ति लोगों करते हैं। मसलन, आम धारणा है कि इतिवर्ती फंड में एकमुश्त निवेश नहीं करना चाहिए। इतिवर्ती फंड में निवेश एसआईपी के जरिये करना चाहिए, ताकि समय के साथ लागत की एवरेजिंग होती रहे। ऐसा करने के कई फायदे हैं। फिर भी, कई लोगों के पोर्टफोलियो इस नियम का पालन नहीं करते हैं और वे इसकी वजह भी बताते हैं कि मुझे एक बार में यह रकम मिली थी और किसी ने मुझे बताया कि इसे एकबार में ही इस फंड में लगा देना चाहिए या मुझे पता है कि सेक्टर फंड्स से अभी परहेज करना चाहिए, लेकिन यह तो साफ दिख रहा है कि इन्फ्लेक्शन का हाल बेहतर होने वाला है, तो मैंने इन्फंड फंड में एक बार में ही मोटी रकम लगा दी या इतिवर्ती में उतार-चढ़ाव होता रहता है, लिहाजा मैंने एफडी में 10 साल के लिए यह रकम लगा दी। ये तो एफडी की तरह ही है। ये तमाम तर्क टिपिकल हैं और इन्होंने से ज्यादातर मामलों में निवेशक ने सोच-समझकर निवेश नियमों का उल्लंघन करने का निर्णय किया होता है। वे ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे खुद को अपनी तर्क बुद्धि से या सलाहकार की मदद से यह समझा ले जाते हैं कि मौजूदा हालात में आम नियम का रास्ता छोड़ना फायदेमंद होगा।

ऐसे समझें

निवेश में अनुशासन व नियमों को समझने के लिए यहां एक उदाहरण पेश है। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा का एक डॉक्यूमेंट है। 'पावर ऑफ टेन' के नाम से। इसे नासा के कंप्यूटर साइंटिस्ट गेरार्ड होल्जमैन ने तैयार किया था। इसमें सेप्टी-क्रिटिकल सॉफ्टवेयर डिवप्प करने के 10 नियम बताए गए हैं। इसके रिसर्च के दौरान होल्जमैन ने पाया था कि अगर नियमों का पालन किया जाए, तो उन्हें कानून की तरह मानना होगा, न कि दिशानिर्देश की तरह। और कुछ ही नियमों का होना बेहतर है, जिनका कमी उल्लंघन न हो। निवेश पर यह उदाहरण बिल्कुल फिट बैठता है। कहने का मतलब कि निवेश के नियमों में अपवाद की कोई जगह नहीं है। हमेशा बुनियादी नियमों का पालन करना चाहिए। और यह नियम है कि इतिवर्ती में कमी भी एकमुश्त निवेश नहीं करें। न ही सीधे शेयर बाजार में और न ही रजुवुअल फंड में। अपने पोर्टफोलियो में विविधता रखें, एसआईपी अपनाएं, नियमित निवेश का पैटर्न अपनाएं। कमी कमाए हो सकता है कि ऐसे हालात बनें, जिनमें निवेश के बुनियादी नियमों के उल्लंघन से बेहतर रिटर्न मिले, लेकिन ऐसे मामले नाममात्र के ही होते हैं।



ट्रेडिंग के जरूरी सूत्र

- ट्रेडर के लिए सबसे अहम है भावों की भाषा
- टेक्निकल एनालिसिस से समझे भावों की धड़कन
- टेक्निकल एनालिसिस में चार्ट का अध्ययन अहम
- ट्रेडर को प्राइस व वॉल्यूम का आकलन करना चाहिए
- टेक्निकल एनालिसिस से ट्रेड अनुमान लगा सकते हैं

टेक्निकल व फंडामेंटल एनालिसिस में अंतर

फंडामेंटल एनालिसिस में जहां हम लंबे निवेश के नजरिए से कंपनी के अतीत और वर्तमान को कमीती पर करके को विश्लेषण करते हैं, वहीं टेक्निकल एनालिसिस मूल रूप से भावों की तात्कालिक गणना पर आधारित पद्धति है। इसका उद्देश्य ट्रेडर को मदद करना होता है। फिर चाहे वह ट्रेडर इंट्रा डे हो या फिर शॉर्ट टर्म ट्रेडर। फंडामेंटल एनालिसिस में हम कंपनी की आय, उसके द्वारा दिए गए लाभांश और शेयर जैसी बातों को अपने अध्ययन का आधार बना सकते हैं।

ऐसे करें एनालिसिस

टेक्निकल एनालिसिस में इनमें से कुछ संकेतकों का उपयोग किया जा सकता है लेकिन इसमें मुख्य रूप से कुछ विशेष टूल्स और तकनीक का इस्तेमाल किया जाता है। इन विशेष साधनों में एक है चार्ट का अध्ययन। चार्ट के जरिए टेक्निकल एनालिसिस करने वाला ट्रेडर दो अहम चीजों पर ध्यान देता है- पहला प्राइस मूवमेंट और दूसरा शेयर का ट्रेड। अगर कोई शेयर आपके द्वारा निर्धारित कीमत से दो फीसदी गिर भी जाता है तो मुनकिन है कि वह अपट्रेंड हो। यानी उसमें गुनाफा वसूली या किसी और वजह से थोड़े वक्त के लिए करेक्शन आया हो लेकिन वह जल्द ही फिर से रफ्तार पकड़ सकता है। टेक्निकल एनालिसिस के जरिए हम समझने की कोशिश करते हैं कि किस सीमा के बाद कोई शेयर दिशा बदल सकता है।

कई तरह के चार्ट पैटर्न

टेक्निकल एनालिसिस में काम आने वाले चार्ट पैटर्न की कई तरह के होते हैं। जैसे- हेड एंड शोल्डर, डबल टॉप या बॉटम वगैरह। इसके अलावा जो चीज टेक्निकल एनालिसिस में बहुत महत्वपूर्ण मानी जाती है, वह है मूविंग एवरेज। मूविंग एवरेज पर अलग से चर्चा करेंगे, फिलहाल हम आपको उसका एक परिचय देते हैं। मूविंग एवरेज का अर्थ है कि कोई शेयर किसी खास अवधि में किस औसत भाव के साथ मूव कर रहा था। इसका आकलन लगाने में हम कुछ और तकनीकी बिंदुओं पर गौर कर सकते हैं, जैसे, सपोर्ट और रेजिस्टेंस। टेक्निकल एनालिसिस के जरिए शेयर के भावों का अर्थशास्त्र समझने में मदद मिलती है।

शेयर बाजार में क्या है अपर सर्किट और लोअर सर्किट?



क्यों घटता-बढ़ता है शेयर का मूल्य?

सामान्य निवेशक इस बात को लेकर कभी कभी बहुत हैरान रहते हैं कि शेयर का मूल्य किस हिसाब से बढ़ता और घटता रहता है। शेयर का मूल्य दो कारणों से बढ़ता या घटता रहता है। पहला कारण शेयर की सप्लाय और डिमांड और दूसरा कारण कंपनी द्वारा मुनाफा कमाना या कंपनी का घाटा। लेकिन, अगर हम स्टॉक ट्रेडिंग में देखें तो शेयर की सप्लाय और डिमांड को वजह से अधिकतर शेयर का मूल्य घटता बढ़ता रहता है। जब भी

शेयर की डिमांड बढ़ती है यानी ज्यादा लोग खरीदते हैं तो उसका दाम बढ़ जाता है। और, जब लोग शेयर को बेचना स्टार्ट कर देते हैं तब शेयर का मूल्य घटने लगता है यह इस तरह से काम करता है। लोअर सर्किट को ऐसे समझें मान लीजिए आपके पास किसी कंपनी का शेयर है। किसी वर्ष के दौरान उस कंपनी को किसी कारणवश घाटा लगना शुरू हो जाता है। ऐसे में आप उस कंपनी का शेयर बेचने लगेंगे। ऐसे ही बहुत से लोग जो उस कंपनी के शेयर को लिए होंगे वह भी बेचना

शुरू कर देंगे। जब सब बेचना शुरू कर देंगे तो एक ही दिन में उस कंपनी का शेयर शून्य तक पहुंच सकता है। ऐसी स्थिति में शेयर का मूल्य एक निश्चित सीमा तक फिर इसके लिए एमएसई तथा बीएसई स्टॉक एक्सचेंज ने कुछ नियम बनाए हैं। जिनके अंतर्गत जब किसी कंपनी में अचानक सब लोग शेयर बेचना शुरू कर दें तो एक निश्चित सीमा तक ही उस शेयर का मूल्य घटेगा। उसके बाद उस शेयर की ट्रेडिंग बंद हो जाएगी। यह जो मूल्य घटने की सीमा है, उसे ही लोअर सर्किट कहते हैं।

कैसे काम करता है अपर सर्किट

अपर सर्किट को एक उदाहरण के जरिए समझते हैं। मान लीजिए कि आपके पास किसी कंपनी के शेयर हैं। उस कंपनी को खूब गुनाफा होता है या किसी कारणवश उस कंपनी में निवेशकों की रुचि बढ़ जाती है। ऐसे में उस कंपनी के शेयर का दाम खूब बढ़ने लगता है। ऐसे में किसी कंपनी के शेयर का मूल्य एक ही दिन में आसमान में पहुंच जाएगा। इसी हालत से बचने के लिए शेयर बाजार में अपर सर्किट का प्रावधान है। उस निश्चित मूल्य सीमा तक उस कंपनी के शेयर का दाम

पहुंचे ही उसमें अपर सर्किट लग जाएगा और उसकी ट्रेडिंग बंद हो जाएगी। जिस तरह से लोअर सर्किट पर 10, 15 और 20 फीसदी का नियम लागू होता है, वही नियम अपर सर्किट पर भी लागू होता है। लोअर सर्किट के तीन चरण होते हैं। यह 10 फीसदी, 15 फीसदी और 20 फीसदी की गिरावट पर लगता है। यदि 10 फीसदी की गिरावट दिन में 1 बजे से पहले आती है, तो बाजार में एक घंटे के लिए कारोबार रोक दिया जाता है। इसमें शुरुआत 45 मिनट तक कारोबार पूरी तरह रुका रहता है और 15 मिनट का प्री-ओपन सेशन होता है।



क्या आपके पीएफ अकाउंट में भी सितंबर-अक्टूबर का कंट्रीब्यूशन नहीं दिख रहा

उन सैलरों कर्मचारियों को चिंता करने की जरूरत नहीं है जिनके पीएफ पासबुक में सितंबर और अक्टूबर 2025 की सैलरी से कटे पैसे अभी तक नहीं दिख रहे हैं। कर्मचारी भविष्य निधि संगठन ने कहा है कि ये सिर्फ एक अस्थायी तकनीकी दिक्कत है, जल्दी ठीक हो जाएगी। ईपीएफओ अपना नया और अपडेटेड इलेक्ट्रॉनिक चालान-कम-रिटर्न सिस्टम लॉन्च कर रहा है। इसलिए हाल के महीनों को पीएफ एंटी फेज में डाली जा रही है। इसी वजह से कुछ लोगों की पासबुक में सितंबर-अक्टूबर के पैसे अभी गायब या अचूरे दिख रहे हैं।

पासबुक लाइव से होगी आसानी

बता दें कि ईपीएफओ ने हाल ही में 'पासबुक लाइव' नाम की नई सुविधा शुरू की है। इसमें आप देख सकते हैं कि आपके खाते में कितना पैसा जमा हुआ, कितना निकला और अभी कितना बचा हुआ है। मतलब जरूरी जानकारी के लिए आसान सुविधा शुरू की गई है। ये सुविधा मॉबल पोर्टल पर ही उपलब्ध है। इसके लिए अलग से पासबुक वाली वेबसाइट पर जाने की जरूरत नहीं पड़ती। साथ ही इससे ट्रैकिंग ज्यादा होने पर भी सिस्टम ठेक भी नहीं होता और जल्दी जानकारी मिल जाती है।

ई-सेवा पोर्टल पर पीएफ पासबुक कैसे चेक करें

यूएनएफ मॉबल ई-सेवा पोर्टल पर जाएं।

- यूएनएफ मॉबल ई-सेवा पोर्टल पर जाएं।
- अपना यूएनएफ, पासवर्ड डालें और ओटीपी से लॉगिन करें।
- डैशबोर्ड पर 'पासबुक लाइव' चुनें, वहां से स्टेटमेंट देखें या डाउनलोड करें।
- उपरोक्त पर 'पासबुक कैसे देखें'
- उपरोक्त में लॉगिन करें।
- ईपीएफओ सर्विस सर्व करें और 'यूएनएफ' पर क्लिक करें।
- यूएनएफ डालें, ओटीपी से वेरीफाई करें, अपना मॉबल आईडी चुनें और ई-पासबुक डाउनलोड कर लें।

ऑनलाइन पीएफ वलेम करने के लिए क्या-क्या चाहिए

- ऑनलाइन वलेम डालने वाले मॉबल को ये चीजें पहले से पूरी करनी जरूरी हैं:
- यूएनएफ एक्टिवेट होना चाहिए और उससे जुड़ा मोबाइल नंबर काम कर रहा हो।
- आधार लिंक और ओटीपी से वेरीफाई होना चाहिए।
- बैंक अकाउंट डिटेल्स ईपीएफओ में अपडेट होनी चाहिए।
- अगर सर्विस 5 साल से कम है और फाइनेल सेटलमेंट करना है तो पेन भी लिंक होना चाहिए। जैसे-जैसे ईपीएफओ नया सिस्टम पूरी तरह लागू करेगा, सितंबर-अक्टूबर 2025 के पीएफ पैसे जल्दी ही सभी की पासबुक में दिखने लगेंगे।

यूपीआई वेरिफिकेशन से लेकर 'स्पॉट ए स्कैम' टूल तक, निवेशकों को फ्राँड से बचाने के लिए सेबी के सुझाव

भारतीय प्रतिभूति एवं विनियम बोर्ड (सेबी) के चेयरमैन तुहिन कांत पांडेय ने निवेशकों की सुरक्षा को मजबूत करने की जरूरत बताई। उन्होंने आगह किया कि नॉन-रजिस्टर्ड एडवाइजर ग्रुप, लोगों को असुरक्षित कारोबारों माध्यम को और आकर्षित कर रहे हैं और इसलिए अवैध कारोबार के मामले नए डिजिटल प्रारूपों में फिर से सामने आ रहे हैं। बीएसई के एक कार्यक्रम में उन्होंने कहा कि इस दौर में जहां गलत सूचनाएं तथ्यों से अधिक तेजी से प्रसारित होती हैं, यह चुनौती और भी बढ़ गई है। उन्होंने कहा कि इसलिए, निवेशक सुरक्षा को मजबूत करना नियामक की प्रमुख प्राथमिकता बन गया है। योजनाओं की पहचान करने में और अधिक सहायता करने के लिए 'स्पॉट ए स्कैम टूल

यूपीआई से जुड़ा एक मान्य ढांचा पेश किया

सेबी ने इन प्रयासों के तहत यूपीआई से जुड़ा एक मान्य ढांचा पेश किया है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि पेमेंट सिर्फ सेबी रजिस्टर्ड मध्यस्थों की प्रामाणिक यूपीआई आईडी पर ही किए जाएं। बाजार नियामक ने जांच सुविधा का भी विस्तार किया गया है जिससे निवेशक 'सेबी इन्वेस्टर' वेबसाइट और सारथी मोबाइल ऐप पर बैंक खातों की वेरिफिकेशन की तुरंत पुष्टि कर सकते हैं। यह समझते हुए कि धोखाधड़ी की गतिविधि बिना किसी चेतावनी के हो सकती है निवेशक अब स्वेच्छ से अपने लेनदेन के खातों को 'फ्रीज' या 'ब्लॉक' कर सकते हैं। यह ठीक वैसे ही है जैसे 'हैक किए गए डेबिट कार्ड को ब्लॉक' किया जाता है। यह विकल्प तत्काल सुरक्षा प्रदान करने के लिए बनाया गया है।

पेश किया है, जो यूजर्स की ऑनलाइन प्रामाणिकता सत्यापित करने में मदद करता है। पांडेय ने बताया कि सेबी ने पिछले 18 महीनों में मेटा, गूगल, टेलीग्राम और एक्स सहित सोशल मीडिया एवं सर्व मॉब पर गैरकानूनी या गलत ऑनलाइन सामग्री के एक लाख से अधिक मामलों को चिह्नित किया है। उन्होंने कहा कि इसके

विश्वसनीय लगते हैं, डिजिटल खाते वैधता का दिखावा करते हैं और पक्के रिटर्न का वादा करने वाली पेशा योजनाएं पेश करते हैं जो कोई भी रेगुलेटेड मार्केट नहीं दे सकता। बाजार नियामक के प्रमुख ने खतरों की गंभीरता को दोहराते हुए कहा कि ऐसे 'नॉन-रजिस्टर्ड एडवाइजर ग्रुप, लोगों को असुरक्षित ट्रेड प्लेटफॉर्म की ओर आकर्षित करते हैं और इसलिए अवैध कारोबार के मामले नए डिजिटल प्रारूपों में फिर से सामने आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि अवैध कारोबार के मामले को रोकने के लिए 'स्पॉट ए स्कैम टूल' नए डिजिटल प्रारूपों में फिर से सामने आ रहे हैं। उन्होंने कहा कि अवैध कारोबार के मामले को रोकने के लिए 'स्पॉट ए स्कैम टूल' नए डिजिटल प्रारूपों में फिर से सामने आ रहे हैं।

अलर्ट हर साल गुजरना पड़ता है इस प्रक्रिया से, जानकारी होना जरूरी

डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट स्वीकार हुआ या नहीं, इस चिंता में हैं? ऐसे चुटकियों में करें चेक

पेंशन जारी रखने के लिए सालाना लाइफ सर्टिफिकेट जमा करना एक जरूरी काम होता है। लेकिन, बहुत से बुजुर्गों की सबसे बड़ी चिंता यही रहती है कि उनका डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट बैंक या पेंशन डिपार्टमेंट में एक्सेप्ट कर लिया या नहीं। और हम जानेंगे कि यह पूरा सिस्टम कैसे काम करता है, इसमें क्या-क्या जानकारी देनी पड़ती है। साथ ही इसमें सबसे जरूरी काम यह पता करना होता है कि आपका सर्टिफिकेट एक्सेप्ट हो गया या नहीं। लाइफ सर्टिफिकेट एक आधार आधारित डिजिटल सर्टिफिकेट है। इससे पेंशन लेने वाले व्यक्ति के जीवित होने की पुष्टि हो जाती है, वो भी बिना बैंक या डिपार्टमेंट के चक्कर लगाए। जैसे ही आप इसे बनाते हैं, यह इलेक्ट्रॉनिक तरीके से आपके पेंशन देने वाले बैंक या डिपार्टमेंट तक पहुंच जाता है। हर सर्टिफिकेट का एक अलग प्रमाण-आईडी नंबर होता है, जिससे आप और डिपार्टमेंट दोनों उसकी स्थिति देख सकते हैं।

डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट बनाने समय आपको ये जानकारी डालनी होती है

आधार नंबर और नाम
रजिस्टर्ड मोबाइल नंबर
पेंशन पेमेंट ऑर्डर नंबर
पेंशन खाते का नंबर और बैंक का नाम
पेंशन मंजूर करने वाले डिपार्टमेंट और पेंशन देने वाले बैंक/डिपार्टमेंट का नाम
इसके बाद फिंगरप्रिंट, आंख की स्कैन या चेहरे की पहचान (बायोमेट्रिक) देनी जरूरी है। अगर कोई भी जानकारी गलत हुई तो सर्टिफिकेट रिजेक्ट हो सकता है। इसलिए बहुत ध्यान से भरें, क्योंकि 30 नवंबर की डेडलाइन नजदीक है।

चेकों की पहचान से कैसे बनाएं सर्टिफिकेट

अगर आप फेस ऑथेंटिकेशन तरीका इस्तेमाल करना चाहते हैं तो आपके पास एडवाइजर फोन होना चाहिए। दो ऐप डाउनलोड करें **adhaar+FaceRD** और **Jeevan Pramaan** फेस App। आगे ये करें : आधार से वेरीफाई करें, पेंशन की सारी डिटेल्स भरें साफ-साफ अपना चेहरा फोटो खिंचवाएं, काम पूरा होने पर आपके रजिस्टर्ड, मोबाइल पर मैसेज आएगा और डाउनलोड लिंक भी मिला जाएगा। सबसे जरूरी: पता करें कि आपका सर्टिफिकेट एक्सेप्ट हुआ या नहीं, सर्टिफिकेट जमा करने के बाद यह जरूर चेक करें कि बैंक/डिपार्टमेंट ने उसे मंजूर किया है या नहीं। तरीका बहुत आसान है। ऑफिशियल वेबसाइट **jeevanpramaan.gov.in** पर जाएं, अपना प्रमाण-आईडी डालकर सर्टिफिकेट डाउनलोड करें, सर्टिफिकेट देखें नीचे मैसेज देखें, अगर लिखा हो कि पीडीए ने एक्सेप्ट कर लिया, मतलब काम हो गया। अगर रिजेक्ट लिखा हो तो तुरंत नया सर्टिफिकेट सही जानकारी और बायोमेट्रिक के साथ बनाएं। अगर दिसंबर से पहले सही सर्टिफिकेट जमा नहीं हुआ तो पेंशन रुक सकती है। इसलिए अभी समय है, आज ही चेक कर लें और जरूरत पड़े तो दोबारा जमा कर दें।

पारिवारिक वसीयत में सही हिस्सा नहीं मिला? जानें, क्या है कानून और कोर्ट में क्या माना जाता है सबूत



परिवार में वसीयत को लेकर झगड़े अक्सर रिश्तों को बिखेर देते हैं। अगर वसीयत में हिस्से बराबर न हों या लगे कि कोई बाहर से दखल दे रहा था, तो मामला और उलझ जाता है। लेकिन कानून के मुताबिक, सिर्फ असमानता देखकर वसीयत को चुनौती नहीं दी जा सकती। यहां बहुत मजबूत सबूत चाहिए। अगर परिवार पहले से ही सही कदम उठाए, तो लंबी अदालती लड़ाई और पैसे की बर्बादी से बच सकते हैं। खैतान एंड कंपनी की पार्टनर ज्योति सिन्हा बताती हैं कि ऐसे मामलों में सही जानकारी होना जरूरी है, वरना छोटी-छोटी बातें नजरअंदाज हो जाती हैं।

छिपे हुए संकेत जो नजर नहीं आते

परिवार वाले अक्सर उन छोटे-छोटे इशारों को निसर कर देते हैं, जो वसीयत में गड़बड़ी की ओर इशारा करते हैं। सिन्हा कहती हैं कि अगर कोई फायदा उठाने वाला शख्स लंबे समय से टेस्टमेंट का सर्टिफिकेट न होना जो दिमागी हालत की पुष्टि करे, या जहां काट-पौट हुई हो वहां इनिशियल्स न हों, तो ये चेतावनी के घंटे हैं। ये चीजें खुद-ब-खुद वसीयत को अमान्य नहीं बनाती, लेकिन जांच की जरूरत बताती हैं। सिन्हा की सलाह है कि इन पर गौर करके जल्दी कदम उठाएं, क्योंकि वक्त बीतने पर सबूत गुम हो सकते हैं।

सबूत जुटाने की जल्दबाजी क्यों?

समय बहुत कीमती है ऐसे मामलों में। सिन्हा कहती हैं कि वसीयत बनाने के वक्त की घटनाओं का टाइमलाइन बनाएं, टेस्टमेंट की शारीरिक और मानसिक स्थिति के बारे में जानकारी इकट्ठा करें। असली हस्ताक्षर के नमूने, फोटो, चिट्ठियां या ईमेल जैसे दस्तावेज रखें, जो ये साबित करें कि वसीयत प्राकृतिक है या संदिग्ध। परिवार अक्सर सोचते हैं कि उनके पास जो कागज हैं, वो बेकार हैं, लेकिन सिन्हा की राय है कि सब कुछ वकील को दिखाएं। वो तय करेंगे कि क्या काम आएगा। अगर देर की, तो महत्वपूर्ण चीजें खो सकती हैं।

अदालतें कैसे काम करती हैं?

जज लोग वसीयत पर दस्तखत करते वक्त की परिस्थितियों को गौर से जांचते हैं। सिन्हा बताती हैं कि क्या टेस्टमेंट आजाद था, उसे सब समझ आ रहा था बीमारी, नशा या कोई ऐसी चीज जो फेसले पर असर डाले, उसकी जांच होती है। अनुचित प्रभाव साबित करना काफी मुश्किल है, क्योंकि कानूनी स्तर ऊंचा है।

अगर वसीयत से बाहर कर दिया गया तो?

वसीयत से नाम कटान अकेले चुनौती का साक्ष्य नहीं होता। सिन्हा कहती हैं कि पहले देखें कि वसीयत की अंतिम कैसे बंद हुई। अगर कोई कानूनी वारिस 'अप्राकृतिक बहिष्कार' का दावा करता है, तो वो संपत्ति-अवयायर्ड संपत्ति के लिए मुश्किल से मान्य होता है, लेकिन पैतृक वारिस के लिए काम कर सकता है। ऐसे में कोई कदम उठाने से पहले वकील से बात जरूर करें, क्योंकि मामला जटिल है।

पटवार भवन रंगशाला में यज्ञ के साथ जिला स्तरीय गीता महोत्सव का आगाज

श्रीमद्भगवद्गीता के अमर संदेश आध्यात्मिक उन्नति के मार्गदर्शक के साथ-साथ सिखाते हैं जीवन जीने की कला: तेजेंद्र दुल

स्कूली बच्चों व अन्य कलाकारों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए

हरिभूमि न्यूज ॥ जीद

भारतीय जनता पार्टी के जिला प्रधान तेजेंद्र दुल ने कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता के अमर संदेश जो न केवल हमारी आध्यात्मिक उन्नति का मार्गदर्शन करते हैं बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाते हैं। आज हम गीता जयंती का पावन उत्सव मना रहे हैं, लिहाजा आज का दिन बहुत ही महत्वपूर्ण व गौरवमयी है।

भाजपा जिलाध्यक्ष तेजेंद्र दुल शनिवार को रंगशाला में आयोजित किए जा रहे तीन दिवसीय गीता महोत्सव का शुभारंभ करने के दौरान उपस्थित लोगों को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर मुख्यअतिथि द्वारा गीता मंडप में यज्ञ में आहुति डाल कर गीता जयंती महोत्सव का विधिवत शुभारंभ किया गया। उन्होंने कहा कि महाभारत के युद्ध क्षेत्र में भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। यह उपदेश केवल अर्जुन के लिए नहीं बल्कि समस्त मानव जाति के लिए है। गीता हमें



जीद। स्टॉल पर जानकारी हासिल करते भाजपा जिलाध्यक्ष तेजेंद्र दुल तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देते बच्चे।



जीद। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देते बच्चे।



फोटो : हरिभूमि

कर्म, भक्ति और ज्ञान के महत्व को सिखाती है। इसमें 18 अध्याय और 700 श्लोक हैं, जिनमें जीवन के हर पहलू का समाधान छिपा है। भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बताया कि कर्तव्यपालन सबसे बड़ा धर्म है। उन्होंने कहा कि आज के युग में गीता के सिद्धांत और भी प्रासंगिक हो गए हैं। जब हर तरफ तनाव, असमंजस और अराजकता है। गीता का ज्ञान हमें सही दिशा दिखा सकता है। यह न केवल आध्यात्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है बल्कि हमारे व्यक्तिगत, सामाजिक और व्यावसायिक जीवन में भी मददगार है। उन्होंने सभी लोगों से आह्वान करते हुए कहा कि गीता केवल एक ग्रंथ नहीं बल्कि जीवन जीने का आधार है। इस दौरान महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा बनाए गए

मुख्य अतिथि ने किया प्रदर्शनी का अवलोकन

गीता महोत्सव में समारोह स्थल पर विभिन्न विभागों की योजनाओं को दर्शाते स्टॉल लगाए गए हैं। जिसका मुख्य अतिथि द्वारा अवलोकन किया गया। इस दौरान उन्होंने कहा कि इन स्टॉलों के माध्यम से सरकार द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी लेकर पात्र व्यक्ति इसका लाभ उठा सकते हैं। इसके अलावा जिला प्रशासन के सहयोग से गुरुकुल विद्यापीठ पांडु पिंडारा द्वारा गीता मंडप भी स्थापित किया गया है। यहां गुरुकुल के विद्यार्थियों द्वारा तीनों दिन यज्ञ का आयोजन किया जाएगा।

सांस्कृतिक गंध पर दिनभर होती प्रस्तुतियां

प्रदर्शनी स्थल पर हथियाणवी वाद्य यंत्रों से सुसज्जित डा. चैन सिंह चंचल व अन्य पार्टियों ने दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित किया। नगाड़ा पार्टी ने कार्यक्रम स्थल पर मुख्यअतिथि सहित अन्य लोगों का स्वागत करते हुए अपनी बेहतरीन प्रस्तुति दी। आमजन इन पार्टियों के साथ सेल्फी लेते हुए दिखे और उन्होंने भी उनके साथ नृत्य करते हुए अपनी खुशी जाहिर की। वहां पर उपस्थित स्कूली बच्चों भी नगाड़ा पार्टी की प्रस्तुति को देखकर काफी रोमांचित हुए।

सेल्फी प्यावंट पर मुख्यअतिथि ने सेल्फी भी ली। इस मौके पर राजेश स्वरूप शास्त्री, बीडीओ राजेश कुमार, सीडीपीओ संतोष, कांता देवी, सीमा मलिक, जोगेंद्र गिल, अमित भारतीय, आशीष कुमार तथा विभिन्न विभागों के अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।



कैथल। विधायक सतपाल जांबा और पूर्व विधायक लीला राम हवन में आहुति डालते हुए तथा विधायक सतपाल जांबा और पूर्व विधायक लीला राम गीता जयंती प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए।

कैथल में हवन एवं गीता पूजन के साथ गीता जयंती महोत्सव का आगाज

कैथल। अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के तहत जिलास्तर पर गीता जयंती समारोह का शनिवार सुबह 6:30 उदय सिंह किला परिसर में हवन एवं गीता पूजन के साथ धूमधाम से आगाज हो गया। शुभारंभ अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में विधायक सतपाल जांबा ने बतौर मुख्य अतिथि शिरकत की, वहीं पूर्व विधायक लीला राम एवं उनकी धर्म पत्नी बलबीर कौर ने यजमान के तौर पर गीता यज्ञ में भाग लिया। सद्गान परिवार की ओर से डा. मनोज कुमार की अनुवाह में विद्वान बाटमण ने मंत्रोच्चारण के साथ गीता आराधना की और यजमान सहित मुख्य अतिथि व जिले भर से आए अन्य गणमान्य लोगों ने यज्ञ में आहुतियां डालकर गीता पूजा की। अतिथियों ने सूचना जनसंपर्क एवं भाषा विभाग द्वारा

लगाई गई प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। सबसे पहले किला पर स्थापित गीता के समक्ष दीप प्रज्वलित कर प्रदर्शनी एवं स्टॉल्स का शुभारंभ कर अवलोकन किया। विधायक सतपाल जांबा ने एसडीएम अजय सिंह के साथ प्रदर्शनी में एक-एक स्टॉल पर जाकर बारीकी से जानकारी हासिल की। उन्होंने सभी विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉलों पर विभागों द्वारा दी जा रही सेवाओं की जानकारी हासिल की। इसके साथ-साथ स्वयं सेवी संस्थाओं द्वारा लगाए गए स्टॉलों का भी निरीक्षण कर उनके उत्पादों के बारे में जानकारी हासिल की। उन्होंने योग कर रहे बच्चों से योग के बारे में चर्चा की। साथ ही उन्होंने प्रगतिशील किसानों राजेश सिक्कर खेड़ी व राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता ईश्वर कुंझ



फोटो : हरिभूमि

के स्टॉल पर जाकर ऑर्गेनिक खेती के बारे में आवश्यक जानकारी हासिल की और किसानों के प्रयासों की सराहना की। प्रदर्शनी में विभिन्न विभागों ने अपने विभाग से संबंधित योजनाओं की जानकारी देते हुए स्टॉल लगाए हैं। श्री कृष्ण कृपा सेवा समिति ने गीता स्टॉल लगाकर यहां तीन दिनों तक गीता आरती की व्यवस्था की है। पूर्व विधायक लीला राम ने कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता केवल एक ग्रंथ नहीं, बल्कि वह कर्तव्य का सतत आह्वान है, और सत्य, सेवा तथा कर्म के मार्ग पर दृढ़ बने रहने की प्रेरणा है। कार्यक्रम के बाद नोडल अधिकारी एसडीएम अजय सिंह ने विधायक सतपाल जांबा, पूर्व विधायक लीला राम का कार्यक्रम में पहुंचने पर पोषा देकर स्वागत किया गया। वहीं

कार्यक्रम के बाद विधायक सतपाल जांबा, पूर्व विधायक लीला राम व उनकी पत्नी बलबीर कौर को एसडीएम अजय सिंह ने शॉल देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर सीजेएम कंवल कुमार, एसडीएम अजय कुमार, एसडीएम शंकर मिल कृष्ण कुमार, डीएसपी सुशील प्रकाश, डीएसपी हीरा लाल, रेडक्रॉस सचिव राजनी लाल, डा. सुरेंद्र यादव, भाजपा नेत्री निधि मोहन, नगर परिषद कैथल की वाइस चेयरपर्सन सीमा, सेवा संघ के अध्यक्ष शिव शंकर पाठवा, एडवोकेट अशोक गोयल, प्रिंसिपल रविंद्र शर्मा, सतपाल गुप्ता, महेंद्र खन्ना, कुशलपाल, अधीक्षक रमेश कुमार, नगर परिषद सचिव पवन शर्मा, लखविंदर सिंह, डा. मनोज कुमार, रिंकू सेनी आदि मौजूद थे।

स्टॉल से लोगों ने जानकारी प्राप्त की

जिला स्तरीय गीता जयंती महोत्सव समारोह में प्रदर्शनी स्थल पर सूचना, जनसंपर्क एवं भाषा विभाग द्वारा सरकार की योजनाओं के साथ-साथ विभागों प्रचार अमले द्वारा सरकारी योजनाओं की जानकारी लोगों को मुहैया करवाई जा रही है इसके अलावा महिला एवं बाल विकास विभाग के स्टॉल पर लगाए गए पोषण आहार से सम्बंधित व्यंजन व विभाग से संबंधित महत्वाकांक्षी योजना की जानकारी दी जा रही। भाजपा जिलाध्यक्ष तेजेंद्र दुल ने कहा कि सरकार द्वारा शिक्षा व स्वास्थ्य की सुविधाएं आमजन के लिए उपलब्ध करवाने का जो लक्ष्य लिया है।

रंगशाला में हुए आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम

सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान वृंदावन से आए प्रसिद्ध कलाकार, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग की मजान मंडली द्वारा गीता का सार पर आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं। कार्यक्रम के दौरान रेनबो लिटल स्कूल की पांच वर्षीय छोटी सी छात्रा लवण्या गोयत ने मैने कर दिया उंचा नाम मेरे हरियाणा का नामक गीत पर मध्य डांस कर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। समारोह में जीद के एसडीएम सत्यवान सिंह हवन व डीआईपीआरओ कृष्ण कुमार ने मुख्य अतिथि को स्मृति चिह्न व शाल भेंट कर उनका अभिनंदन किया।

खबर संक्षेप

लीकेज से हर समय सड़क पर रहता पानी
राजौदा। राजौद के मुख्य मार्ग पर खेड़े के पास सड़क के साथ पाइपलाइन लीकेज होने के कारण हर समय सड़क पर कीचड़ युक्त पानी भरा रहता है। सड़क पर पानी रहने से लोगों को दुर्घटनाओं का शिकार होना पड़ा रहा है। वार्ड नंबर 6 के लोगों ने कहा कि पिछले कई दिनों से यहां पानी बह रहा है लेकिन संबंधित विभाग इस ओर कोई ध्यान नहीं दे रहा। इससे पाइपों में गंदा पानी भरकर फिर घरों में चला जाता है। वार्ड वासी नरेंद्र प्रताप राकेश रमेश धर्मेंद्र ने कहा कि एक तो सड़क पहले पूरी तरह टूटी हुई है। जो पानी की स्पलाई होती है पानी लीक होने के कारण सड़क पर पानी जमा हो जाता है।

चार को पंचकूला में होंगे प्रतियोगिता के ट्रायल
कैथल। जिला खेल अधिकारी राज रानी ने बताया कि अखिल भारतीय सिविल सेवा एथलेटिक्स प्रतियोगिता 2025-26 का आयोजन 13 दिसंबर से 15 दिसंबर तक पाटलिपुत्र स्पोर्ट्स कम्प्लेक्स बाग कंकड़बाग पटना में होगा। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले खिलाड़ियों के ट्रायल का आयोजन (पुरुष व महिला) टीम का चयन 4 दिसंबर को ताऊ देवीलाल स्पोर्ट्स कम्प्लेक्स, सेक्टर-3, पंचकूला में किया जा रहा है। ट्रायल में भाग लेने, जाने, आने का व्यय तथा प्रतियोगिता में भाग लेने हेतु आने व जाने का व्यय संबंधित खिलाड़ियों के विभाग द्वारा वहन किया जाएगा

बच्चों को प्रकाश मोटर गैरेज ने बांटी किट

कैथल। बच्चों के बेहतरीन परिणाम सुनकर गांव के एक समाजसेवी के द्वारा बच्चों को प्रोत्साहन के रूप में उन्हें खेलने की किट देकर सम्मानित किया गया। प्रकाश मोटर गैरेज के द्वारा बच्चों को खेलों में भाग लेने के लिए बच्चों को प्रेरित किया। खो-खो कोच रणदीप दुल ने बताया कि मिनाजी के अंदर आज से शुरू सब जुनियर वैपियनशिप में को को सेंटर हरसोला के पांच खिलाड़ी कैथल जिले का प्रतिनिधित्व करने व 6-7 दिसंबर को जुनियर स्टेट वैपियनशिप जो कैथल की गौलम युनिवर्सिटी में आयोजित होगी उसमें भी खो-खो सेंटर हरसोला के 15 में से 12 खिलाड़ी कैथल जिले की टीम का प्रतिनिधित्व करेंगे। प्रकाश ने बच्चों को आश्वासन दिया कि आगे भी बच्चों के लिए किसी भी खेल सामग्री की जरूरत पड़ी तो बच्चों के सहयोग में साथ में खड़े रहेंगे। मौके पर मनदीप, परमजीत, सुरेश, सुभाष, राजेश, प्रदीप, बाक्सिंग कोच किरण पाल भी शामिल रहे

हरिभूमि

आवश्यक सूचना

जिन पाठकों को खबरार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य खबरार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सएप करें :-

हुडा कॉम्प्लेक्स, डी.आर.डी.ए. के सामने, जीद हरिभूमि कार्यालय, करनाल रोड, जाट स्टैडियम के सामने, कैथल फोन : 8295157800, 8814993186, 8814999166, 9253681005

ध्रुव पब्लिक स्कूल के बच्चों ने बाल भवन में लहराया परचम

विभिन्न प्रतियोगिताओं में हासिल की शानदार उपलब्धियां

हरिभूमि न्यूज ॥ पूंडरी

बाल भवन कैथल में आयोजित विभिन्न शैक्षिक और सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में ध्रुव पब्लिक स्कूल पूंडरी के विद्यार्थियों ने अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन के विद्यालय व क्षेत्र का नाम रोशन किया। प्रतियोगिताओं में बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने भाग लिया, जिनमें ध्रुव पब्लिक स्कूल के बच्चों ने अपनी प्रतिभा और आत्मविश्वास का प्रभावी प्रदर्शन करते हुए उल्लेखनीय स्थान प्राप्त किए। प्रिंसिपल प्रवीण दिल्ली ने बताया कि विद्यालय की छात्रा प्रतिभागिता कक्षा 11वीं ने विज्ञान भाषण प्रतियोगिता में शानदार प्रदर्शन कर प्रथम स्थान



फोटो: हरिभूमि

पूंडरी। विजेता रही छात्रा को सम्मानित करती प्रिंसिपल प्रवीण दिल्ली।
हासिल किया। स्वस्तिका ने केवल स्कूल का नाम बहाया। विद्यालय प्रबंधन ने स्वस्तिका सहित सभी प्रतिभागियों को उनकी उपलब्धियों के लिए हार्दिक बधाई दी। प्रबंधन ने कहा कि विद्यार्थियों की यह सफलता उनके निरंतर परिश्रम और शिक्षकों के समर्पित मार्गदर्शन का परिणाम है। स्कूल प्रबंधन ने सभी बच्चों के उज्वल भविष्य की कामना की।



पूंडरी। यात्रा के दौरान संयोजक विनीत त्यागी के साथ पौधरोपण करते हुए पार्षद अमित सैनी।

अमित सैनी पूंडरी ने यूनिटी मार्च 150 में लिया हिस्सा, युवाओं में राष्ट्रीय एकता का संदेश दिया

पूंडरी। पूंडरी युवा भाजपा नेता एचम मनोनीत पार्षद अमित सैनी ने गुजरात में आयोजित यूनिटी मार्च 150 में भाग लेकर क्षेत्र का नाम रोशन किया। सैनी ने सोमवार को इस विशेष यात्रा में शामिल होते हुए राष्ट्रीय एकता, सामाजिक समरसता और युवाओं की राष्ट्र निर्माण में भागीदारी को सशक्त संदेश देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यात्रा के दौरान भाग्य संयोजक विनीत त्यागी के साथ चलते हुए उन्हें कई सामाजिक, धार्मिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों से जुड़े लोगों से मिलने और अनुभव साझा करने का अवसर मिला। अमित सैनी ने बताया कि इस यात्रा ने उनके मन में राष्ट्र भावना को और अधिक मजबूत किया है।

इंटर स्कूल ग्रुप डांस में आधारशिला स्कूल बना विजेता

जीद। हैबतपुर के एक प्राइवेट स्कूल में आयोजित इंटर स्कूल ग्रुप डांस प्रतियोगिता में आधारशिला पब्लिक स्कूल जीद की टीम विजेता बनी।

इसके अलावा द्वितीय स्थान इंडस पब्लिक स्कूल जीद तथा आर्य सीनियर सेकेंडरी स्कूल अहिरका की टीम ने पाया। तीसरे स्थान पर दिल्ली पब्लिक स्कूल लोहचब तथा सरस्वती पब्लिक स्कूल नगरुं की टीम रही। कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि कांग्रेस के जिला प्रधान और हैबतपुर गांव के संपर्क रिश्तापाल सिहाग ने शिरकत की।

राजकीय महिला महाविद्यालय में एनएसएस शिविर का आयोजन

एनएसएस का उद्देश्य केवल सेवा ही नहीं बल्कि समाज के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना

हरिभूमि न्यूज ॥ जीद

प्रियदर्शिनी इंदिरा गांधी राजकीय महिला महाविद्यालय में एक दिवसीय एनएसएस स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें सिविल अस्पताल से डा. रमेश पांचाल और उनकी मेडिकल टीम ने अपनी सेवाएं दीं। यह कार्यक्रम महाविद्यालय के



एनएसएस यूनिट 1 एवं यूनिट 2 द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य जयनारायण गहलावत ने शिविर का शुभारंभ किया तथा स्वयंसेवकों को स्वास्थ्य जागरूकता, सामाजिक जिम्मेदारी और जनसेवा की भावना

को जीवन में उतारने के लिए प्रेरित किया। एनएसएस का उद्देश्य केवल सेवा ही नहीं बल्कि समाज के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना भी है। शिविर में छात्राओं ने स्वतःचाल, शुभारंभ स्तर, हीमोग्लोबिन जांच, सामान्य स्वास्थ्य परीक्षण व परामर्श सेवाओं का लाभ उठाया।

सीआरएसयू हर क्षेत्र में स्थापित कर रहा नए आयाम : कर्मवीर सैनी

युवाओं का भविष्य बनाने के लिए प्रदेश में अनुकूल वातावरण

छात्र चमका रहे देशभर में नाम

हरिभूमि न्यूज ॥ जीद

हरियाणा राज्य सूचना आयुक्त कर्मवीर सैनी ने कहा कि सरकार द्वारा प्रदेश में युवाओं का भविष्य उज्वल बनाने के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया जा रहा है ताकि वे हर क्षेत्र में आगे बढ़कर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकें। इसी सकारात्मक माहौल का परिणाम है कि मात्र 11 वर्ष पूर्व एक



जीद। सीआरएसयू में राज्य सूचना आयुक्त कर्मवीर सैनी को स्मृति चिह्न प्रदान करते वीसी प्रो. रामपाल सैनी।

भवन से शुरू हुआ सीआरएसयू आज अपनी अलग पहचान स्थापित कर चुका है। सीआरएसयू के विद्यार्थी शिक्षा, खेल, सांस्कृतिक गतिविधियों सहित विभिन्न क्षेत्रों में प्रदेश और देशभर

में नाम रोशन कर रहे हैं। राज्य सूचना आयुक्त कर्मवीर सैनी शनिवार को चौधरी रणबीर सिंह विश्वविद्यालय में आयोजित प्रदेश स्तरीय हरियाणा उत्सव कार्यक्रम के दूसरे दिन शनिवार को मुख्य

ये रहे मौजूद

मौके पर एशियन कबड्डी फेडरेशन के चेयरमैन गुलाब सैनी, नगर परिषद चेयरमैन प्रतिनिधि डा. राज सैनी, पानीपत मेयर कोमल सैनी, कैप्टन योगेश बैरागी, जिला पार्षद दिनेश सैनी, अनूप लाठर इत्यादि भी मौजूद रहे।

अतिथि के रूप में संबोधित कर रहे थे। वीसी प्रो. रामपाल सैनी की अध्यक्षता में आयोजित हरियाणा उत्सव को बेहद सफल और ऐतिहासिक बताते हुए कर्मवीर सैनी ने कहा कि यह आयोजन केवल एक सांस्कृतिक कार्यक्रम नहीं है

कर्मवीर सैनी का गर्मजोशी से स्वागत किया

हरियाणा की संस्कृति समृद्ध और प्रेरणादायक है। जिसे नई पीढ़ी तक पहुंचाना अत्यंत आवश्यक है। हरियाणा राज्य सूचना आयुक्त कर्मवीर सैनी ने हरियाणा के कलाकारों से आह्वान करते हुए कहा कि वे भी पंजाब के कलाकारों की तर्ज पर अपना कला को विश्व स्तर तक पहुंचाने बनावें। इसके लिए मुख्यमंत्री नायब सैनी के नेतृत्व में सरकार द्वारा जहां फिल्म सिटी निर्माण जैसे बड़े कदम उठाये हैं वहीं कई अन्य तरह की योजनाओं का शुरु किया है। उन्होंने कहा कि वीसी प्रो. रामपाल सैनी सीआरएसयू को विश्व स्तर का विश्वविद्यालय बनाने का प्रयास कर रहे हैं। जिसके सकारात्मक परिणाम भी सामने आने लग गये हैं। कार्यक्रम के दौरान सीआरएसयू के कुलगुरु प्रो. रामपाल सैनी और आयोजन मंडल ने मुख्यअतिथि कर्मवीर सैनी का गर्मजोशी से स्वागत किया। कलाकारों की विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियों ने दर्शकों का मन मोह लिया और पूरे परिसर में लोक संस्कृति की सुगंध बिखेर दी।

बल्कि यह विश्वविद्यालय प्रशासन की छात्रों के चहुंमुखी विकास के प्रति गंभीरता को दर्शाता है। ऐसे आयोजन न केवल प्रदेश की कला, संस्कृति और परंपराओं को सहेज कर रखते हैं।



सुदृढ़ संचार व्यवस्था हो या सामरिक सुरक्षा का मामला, कृषि उत्पादन में बढ़ोतरी की बात हो या प्राकृतिक आपदाओं का पूर्वानुमान लगाना हो, इन सबके लिए स्पेस टेक्नोलॉजी में नित नई ऊंचाई छूना जरूरी है। इस दिशा में इसरो निरंतर अग्रसर है। यही नहीं विश्व की स्पेस सुपर पावर बनने के लिए भी इसरो के पास कई इंपॉर्टेंट प्रोजेक्ट्स और प्लानिंग्स हैं। इन सभी पर एक विस्तृत नजर।



अंतरिक्ष में नई ऊंचाई छूने के लिए निरंतर अग्रसर इसरो

कवर स्टोरी
संजय श्रीवास्तव

इसरो द्वारा तीन साल के भीतर अंतरिक्षयान निर्माण की तीन गुनी क्षमता का लक्ष्य निर्धारण, भारत की अंतरिक्ष महत्वाकांक्षा का पूर्वाभास है। यदि यह हासिल हो जाता है, तो भारतीय अंतरिक्ष एजेंसी भी न सिर्फ नासा और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के समानांतर खड़ी होगी बल्कि विश्व अंतरिक्ष बाजार में भी वह बहुत बड़ी खिलाड़ी बन जाएगी।

देश की प्रति के लिए जरूरी: भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन, इसरो का अगले तीन वर्षों में अपने अंतरिक्षयान निर्माण क्षमता को तिगुना करने का फैसला, देश की बदलती सामरिक, वैज्ञानिक और आर्थिक प्राथमिकताओं के पूर्वाभास सरीखा है। इसरो चाहता है कि खुद को अंतरिक्ष के क्षेत्र में भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल सके, ताकि वो निजी कंपनियों की श्रेणी में ऊपर की ओर अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रतिस्पर्धा के बीच अविचल आगे आ सके। उसकी यह पहल, देश को विश्व की अग्रणी अंतरिक्ष शक्तियों की श्रेणी में ऊपर की ओर स्थान दिलाने की दिशा में एक रणनीतिक विस्तार है। अंतरिक्ष यान निर्माण क्षमता को बढ़ाना कई वजहों से जरूरी है। 5जी से बढ़कर 6जी की ओर बढ़ना है, तो सैकड़ों छोटे उपग्रहों को अंतरिक्ष में भेजना ही होगा। पृथ्वी अवलोकन और जलवायु निगरानी उपग्रहों की मांग भविष्य में बहुत ज्यादा बढ़ेगी।

वैश्विक शक्ति बनने की है सामर्थ्य: वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में उपग्रहों और उनकी सेवाओं की मांग अभूतपूर्व तरीके से बढ़ रही है। संचार, अर्थ ऑब्जर्वेशन, रक्षा, निगरानी, नेविगेशन, आपदा प्रबंधन, कृषि और ऊर्जा क्षेत्रों में उपग्रहों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होने के चलते आने वाले दशक में हजारों नए उपग्रह लॉन्च होने की उम्मीद है।

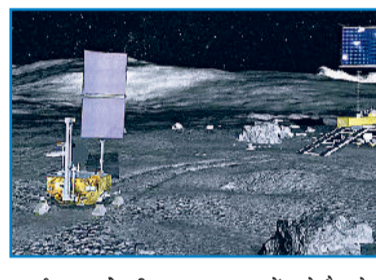
भारत के पास सस्ता, तेज, कुशल और विश्वसनीय अंतरिक्ष अभियान संचालन की बेहतर क्षमता है, इसको पूरी दुनिया जान और मान रही है। तमाम देश इसके लिए भारत की ओर आकर्षित भी हैं। लेकिन अंतरिक्ष यान

निर्माण-क्षमता के सीमित होने के कारण देश बेहतर निवेश करने के बावजूद इस तेजी से बढ़ती वैश्विक मांग का पूरा लाभ नहीं उठा पा रहा। इसरो अभी सालाना औसतन 6 से 7 अंतरिक्षयान बनाता है। तीन साल बाद क्षमता तीन गुना होने का मतलब है कि वह 18 से 21 अंतरिक्षयान प्रति वर्ष तैयार कर सकेगा। फिर उसके पास अन्य देशों के उपग्रहों के लांच के लिए न सिर्फ पर्याप्त यान होंगे बल्कि उन्हें लांच के लिए विंडो भी। कम समय अंतराल पर होने और निर्माण तथा लांच सुविधाएं सीमितता के चलते इसरो के कई प्रक्षेपण कार्यक्रम आपस में ओवरलैप करते हैं। इसरो द्वारा उत्पादन वृद्धि के साथ सैटेलाइट इंटीग्रेशन सेंटर्स की संख्या बढ़ाना इस ओवरलैप को कम करेगा। अंतरिक्षयानों की संख्या में वृद्धि भारत को वैश्विक प्रक्षेपण सेवाओं के बड़े बाजार में मजबूत प्रतिस्पर्धी बनाएगा, जहां आज



अमेरिका की स्पेस-एक्स जैसी निजी कंपनियों लगभग एकछत्र राज कर रही हैं। **संभावनाएं-क्षमताएं हैं भरपूर:** आज भारत, वैश्विक अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में केवल 2 प्रतिशत हिस्सेदारी रखता है, इसरो इसे 2030 तक 8 फीसद तक ले जाने के लक्ष्य पर काम कर रहा है। क्षमता विस्तार, निजी साझेदारी और नई तकनीकों का विकास इसे संभव बना सकता है। बेशक इससे भारतीय अर्थव्यवस्था में बढ़ोतरी दर्ज होगी तथा संबंधित क्षेत्र में साख भी बढ़ेगी। अमला में इसरो की रणनीति महज अपने अंतरिक्ष यानों की संख्या बढ़ाने तक

सीमित नहीं है। इस दौर में जब देश में कई स्पेस स्टार्टअप तेजी से उभर रहे हैं, इसरो की प्लानिंग है कि अंतरिक्षयान निर्माण में तमाम बड़ी निजी कंपनियों जैसे लासर्स एंड टुब्रो, गोदरेज, एचएएल, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स, स्कार्फूट, अगिनकुल, ध्रुव स्पेस तथा अन्य छोटे



मजबूत होगी। **कई स्तरों पर करनी होगी पहल:** इसरो के सभी प्रोजेक्ट्स समय से पूरे हों, इस लिए भी इसरो को अपनी यान निर्माण क्षमता को तीन गुना बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। चंद्रयान-4 भारत के लिए अमेरिका के अपोलो कार्यक्रम की तरह विशिष्ट होगा। यह चंद्रमा से नमूने वापस लाकर भारत को उस

सैपल रिटर्न टेक्नोलॉजी में सक्षम बनाएगा, जो संसार के महज तीन देशों के पास है। इसी तरह जापान की अंतरिक्ष एजेंसी जाक्सा के साथ लूपेक्स मिशन, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर कभी मौजूदगी तलाश उसकी उपयोगिता समझने का अवसर देगा। यह भविष्य के मानव मिशनों के लिए ईंधन और पानी का स्रोत समझाएगा। भारत अपने अंतरिक्ष स्टेशन के पहले मॉड्यूल को 2028 तक पूरा करते हुए 2035 तक पांच मॉड्यूल वाला अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करना चाहता है। इस पूरे प्रकरण में सरकार की जो भूमिका हो सकती है, वह यह है कि उसके द्वारा अंतरिक्ष नीति और विनियमों को सरल बनाया जाए ताकि निजी निवेश, इसरो को लंबी अवधि की फंडिंग और स्टार्टअप ईकोसिस्टम को बढ़ावा मिले, मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम पर नियमित निवेश एवं निजी भागीदारी को गति मिले, जिससे इसरो अधिक प्रक्षेपण केंद्र और ट्रेकिंग स्टेशन स्थापित कर सके। अंतरराष्ट्रीय सहयोग के विस्तार पर भी सरकार को जोर देना होगा। फिलहाल इसरो का फैसला देश को वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में आर्थिक शक्ति बनाएगा, लाखों नौकरियों का सृजन, युवा वैज्ञानिकों के लिए अवसर पैदा करेगा। *

और प्रभावी खिलाड़ी बन सकेगा। इनके अलावा इस क्षेत्र में आत्मनिर्भरता और ज्यादा बढ़ेगी, तो विदेशी कंपनियों पर निर्भरता कम होती जाएगी। बड़ी बात यह भी कि पांच मॉड्यूल वाला देश का अंतरिक्ष स्टेशन समय पर स्थापित करने की संभावना भी इससे

मजबूत होगी। **कई स्तरों पर करनी होगी पहल:** इसरो के सभी प्रोजेक्ट्स समय से पूरे हों, इस लिए भी इसरो को अपनी यान निर्माण क्षमता को तीन गुना बढ़ाने के लिए प्रेरित किया है। चंद्रयान-4 भारत के लिए अमेरिका के अपोलो कार्यक्रम की तरह विशिष्ट होगा। यह चंद्रमा से नमूने वापस लाकर भारत को उस

सैपल रिटर्न टेक्नोलॉजी में सक्षम बनाएगा, जो संसार के महज तीन देशों के पास है। इसी तरह जापान की अंतरिक्ष एजेंसी जाक्सा के साथ लूपेक्स मिशन, चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर कभी मौजूदगी तलाश उसकी उपयोगिता समझने का अवसर देगा। यह भविष्य के मानव मिशनों के लिए ईंधन और पानी का स्रोत समझाएगा। भारत अपने अंतरिक्ष स्टेशन के पहले मॉड्यूल को 2028 तक पूरा करते हुए 2035 तक पांच मॉड्यूल वाला अंतरिक्ष स्टेशन स्थापित करना चाहता है। इस पूरे प्रकरण में सरकार की जो भूमिका हो सकती है, वह यह है कि उसके द्वारा अंतरिक्ष नीति और विनियमों को सरल बनाया जाए ताकि निजी निवेश, इसरो को लंबी अवधि की फंडिंग और स्टार्टअप ईकोसिस्टम को बढ़ावा मिले, मानव अंतरिक्ष उड़ान कार्यक्रम पर नियमित निवेश एवं निजी भागीदारी को गति मिले, जिससे इसरो अधिक प्रक्षेपण केंद्र और ट्रेकिंग स्टेशन स्थापित कर सके। अंतरराष्ट्रीय सहयोग के विस्तार पर भी सरकार को जोर देना होगा। फिलहाल इसरो का फैसला देश को वैश्विक अंतरिक्ष बाजार में आर्थिक शक्ति बनाएगा, लाखों नौकरियों का सृजन, युवा वैज्ञानिकों के लिए अवसर पैदा करेगा। *

कई प्रोजेक्ट्स पर हो रहा काम

इसरो के लिए आने वाला दशक निर्णायक है। इस वर्ष और अगले वर्ष में इसरो के पास आधे दर्जन से अधिक महत्वपूर्ण कार्यक्रम शेष हैं और अगले कुछ वर्षों में संचालित होने वाले इसरो के पूरे नियत कई प्रमुख अभियानों को बहुत जटिल और महत्वाकांक्षी हैं। गगनयान के कई मानव-रहित परीक्षण, मानव सहित गगनयान, 2028 में जाने वाला चंद्रयान-4, जापानी अंतरिक्ष एजेंसी के साथ मिशन लूटोक्स, एक्सप्लोररी मिशन तथा रि-यूजेबल लॉन्च व्हीकल का विकास, शुक्रयान और भारतीय अंतरिक्ष स्टेशन, नई पीढ़ी के संचार उपग्रह जैसे कई महत्वाकांक्षी मिशन पर कार्य जारी है।



कविता

गिरना भी अच्छा होता
कभी-कभी गिरना भी अच्छा होता, गिरने से संतलना सीखते फिर चलना सीखते। समझ में आता है श्रुति हर वीज की अच्छी होती नहीं, बात-बात पर श्रद्धाकारी, श्रौंर ज्यादा ज्ञानी समझने से बच जाते। बात यह भी जरूरी है कि गिरने को किस रूप में देखते हो, दिवालित होते हो या नए सारस से आगे बढ़ते हो गिरने से दिग्गज भी डिकाने रस्ता अपने श्रौंर पराए पर पर्दा उठ जाता। अगर गिरे तो फिर नए रूप लेकर उठो नए विचार लेकर उठो वैदिक होकर जीना सीखो इसलिए कभी-कभी गिरना भी अच्छा होता है।

दरवाजा

असाइनमेंट पूरा कर रहा हूँ। आप डिस्टर्ब मत करिए। 'ठीक है बेटा, कितना समय लगेगा, इसे पूरा करने में?' दादाजी ने बड़े प्यार से पूछा। 'दादाजी मैं अभी कैसे बता दूँ, आप डिस्टर्ब मत कीजिए प्लीज।' परेश ने तेज स्वर में बोला। 'ठीक है बेटा, मैं नीचे तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ।' यह कहकर दादाजी ने कमरे से बाहर निकलते समय पलटकर देखा, परेश अपने मोबाइल में लगा दिखाने में व्यस्त था। दादाजी के कमरे से निकलते ही परेश ने अपने कमरे का दरवाजा तेज आवाज के साथ बंद कर दिया। दादाजी कुछ देर दरवाजे के पास भाव शून्य खड़े रहे। उनकी आंखों में एक नमी उतर आई थी। *

आपके दरवाजे पर नहीं, आपकी जेब में बैठा है। इधर मेरा मोबाइल ही मेरा पूरा जीवन समझता है- कब रिचार्ज खत्म होगा? कब बीमा एक्सपायर होगा? कब कार की सर्विसिंग करानी है? कब पुरानी कार बेचे चार साल हो गए? यह सब याद दिला रहा है। सच कहूँ तो मोबाइल ने आदमी को अकेला किया, या अकेलापन आदमी को मोबाइल तक ले गया, ये तफरीक अब मैं भी नहीं कर पाता। मोबाइल पर आध्यात्मिक गुरुओं के संदेश, प्रेरक कथन और भविष्यवाणियाँ भी तड़तड़ आ रहे हैं। सुबह-सुबह इतनी 'ज्ञान-वर्षा' कि दिमाग की हार्ड डिस्क फुल होकर ओवरहीट हो जाए। पर सही कहूँ, रेलवे की लाइनें और मोबाइल दोनों ही हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की लाइफलाइन हैं। एक में लगकर देश चलता है और दूसरे में खोकर आदमी। इतने में मेरी लाइन भी दो-चार इंच आगे बढ़ गई। शायद मेरे नंबर का भी समय आ रहा था और मोबाइल पर एक नया मैसेज की जंम

लघुकथा / सतीश उपाध्याय

मम्मी, दादाजी की वजह से हमारी पढ़ाई डिस्टर्ब होती है, बार-बार हमारे कमरे में आ जाते हैं।' परेश ने अपनी माँ से दादाजी की शिकायत की। सामने कुर्सी पर बैठे दादाजी अखबार पढ़ रहे थे, वह चुपचाप बोले, 'नहीं बेटा, ऐसी बात नहीं है। तुमको मैंने तीन घंटे से नहीं देखा था, इसलिए ऐसे ही तुम्हें देखने तुम्हारे कमरे में चला आया था।' परेश की मम्मी बेटे का पक्ष लेते हुए बोलीं, 'बाबूजी, थोड़ा बुद्धि से काम लिया करिए। स्कूल से कितना होमवर्क मिलता है, असाइनमेंट पूरा करना होता है। अगर वह आपसे बात करेगा तो उसका होमवर्क कैसे पूरा हो पाएगा?' दादाजी आहिस्ता से बोले, 'बेटा बात सही है, अब मैं आगे से ध्यान रखूँगा।' अगला दिन छुट्टी का था। परेश सारा दिन अपने लैपटॉप और मोबाइल में ही बिजी था। दादाजी के भीतर अपने पोते के प्रति प्यार उमड़ता वह अपने आपकी रोक नहीं पाए। परेश के कमरे में चले गए। परेश के बेड पर स्कूल की कॉपी-किताबें बिखरी हुई थीं। वह मोबाइल में बिजी था। उसने दादाजी को आहत सुनी, लेकिन वह दादाजी की उपेक्षा करते हुए अपने मोबाइल में ही लगा रहा। दादाजी ने पूछा, 'क्या कर रहे हो बेटा?' परेश रूखे स्वर में बोला, 'दादाजी देख नहीं रहे हैं, मैं अपना

लगत है हर कंपनी ने मेरे लिए ही सुकुमारी ब्रांड की मॉडल को विज्ञापन में खड़ा किया है। एक बार जल्दबाजी में मैंने सुकुमारी के मोहपाश में बंधे सब्सक्रिप्शन डाल दिया था, तभी से वह मेरे जीवन की स्थाई सदस्य बन चुकी है। मोबाइल की क्या करे। कंपनियां चाहती हैं कि आप दिन-रात उसी से चिपके रहो। कभी धमका सेल, कभी प्लेयर्स सेल, कभी लास्ट स्टॉक, हड़प लो! नई पीढ़ी को ये सेल-ऑफर ऐसे जकड़ती है कि किसी उल्टे-सीधे काम में ऊर्जा लगे, उससे अच्छा है कि स्क्रीन पर अंगूठा फिसलते रहो। गेम्स, जुआ, स्टूटा, लॉटरी सब आपके दरवाजे पर नहीं, आपकी जेब में बैठा है। सच कहूँ तो मोबाइल ने आदमी को अकेला किया, या अकेलापन आदमी को मोबाइल तक ले गया, ये तफरीक अब मैं भी नहीं कर पाता। मोबाइल पर आध्यात्मिक गुरुओं के संदेश, प्रेरक कथन और भविष्यवाणियाँ भी तड़तड़ आ रहे हैं। सुबह-सुबह इतनी 'ज्ञान-वर्षा' कि दिमाग की हार्ड डिस्क फुल होकर ओवरहीट हो जाए। पर सही कहूँ, रेलवे की लाइनें और मोबाइल दोनों ही हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की लाइफलाइन हैं। एक में लगकर देश चलता है और दूसरे में खोकर आदमी। इतने में मेरी लाइन भी दो-चार इंच आगे बढ़ गई। शायद मेरे नंबर का भी समय आ रहा था और मोबाइल पर एक नया मैसेज की जंम

डिजिटल गेम्स वर्तमान है शानदार-उज्ज्वल है भविष्य

हाल के वर्षों में मनोरंजन के लिहाज से डिजिटल गेम्स का क्रेज जाबरदस्त तरीके से बढ़ा है, निरंतर इसमें इजाफा भी हो रहा है। खासतौर पर इसे लेकर नई पीढ़ी में बहुत दीवानगी देखी जाती है। इसकी वजह है वजह और कैसा है भविष्य, जानिए।



टेक्नोलॉजिक लोकप्रिय गौतम

आज के युग में मनोरंजन, शिक्षा और तकनीकी प्रयोग का सबसे लोकप्रिय माध्यम बन चुके हैं-डिजिटल गेम्स। मोबाइल, कंप्यूटर, टैबलेट और गेमिंग कंसोल के जरिए खेले जाने वाले ये खेल महज खेल नहीं हैं बल्कि आज की तारीख में अरबों रूपए का कारोबार भी है। नई पीढ़ी के बीच इन डिजिटल गेम्स का आकर्षण इतना अधिक है कि अब ये डिजिटल गेम्स एक पूरी संस्कृति का रूप ले चुके हैं। **क्या होते हैं डिजिटल गेम्स:** डिजिटल गेम्स सही मायने में इलेक्ट्रॉनिक खेल होते हैं। इन्हें डिजिटल गेम इसलिए कहा जाता है, क्योंकि ये किसी डिजिटल डिवाइस के जरिए खेले जाते हैं। जैसे- कंप्यूटर, लैपटॉप, मोबाइल फोन, टैबलेट या वीडियो गेम कंसोल। डिजिटल गेम्स में ग्राफिक, ध्वनि और उपयोगकर्ता का सीधे-सीधे संपर्क या इंटरैक्शन संभव है। यह इंटरैक्शन या संपर्क दो तरीके से होता है। इसमें एक है 'वर्चुअल अनुभव'।

वास्तव में वह किसी अनुभव के आधार पर तैयार किए जाते हैं और यहाँ इनकी भूमिका बदल जाती है। यह केवल शारीरिक सक्रियता या महज मनोरंजन का कारण नहीं होते बल्कि कभी-कभी सीखने, कभी रणनीति बनाने, कभी निर्णय क्षमता को परखने या उसे विकसित करने तथा कभी-कभी हीनभावना को दूर करने का तरीका भी होते हैं। **दीवानी है नई पीढ़ी:** नई पीढ़ी में डिजिटल गेम्स को लेकर बहुत ज्यादा आकर्षण या कहें क्रेज है। विशेषकर जनरेशन जेड और अल्फा, डिजिटल दुनिया में जन्मी, पली-बढ़ी पीढ़ियाँ इन खेलों की दीवानी हैं। इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि इनका बचपन मोबाइल और इंटरनेट के साथ खेलते और इस्तेमाल करते हुए गुजरा। इसलिए डिजिटल गेम्स को ये मनोरंजन नहीं कहते बल्कि अपने व्यक्तित्व की पहचान, प्रतिस्पर्धा और आत्म अभिव्यक्ति का माध्यम मानते हैं। **इसलिए बढ़ रहा इतना क्रेज:** नई पीढ़ी में डिजिटल गेम्स का इतना क्रेज इसलिए है, क्योंकि यह वास्तविक अनुभव देता है। आज के डिजिटल गेम्स में एक साथ वीडियो गेमिंग, वर्चुअल रियलिटी और एआर यानी ऑगमेंटेड रियलिटी का इस्तेमाल होता है, जिसे खिलाड़ी इन्हें दूर से खेलता हुआ नहीं लगता बल्कि खुद को वह खेल के भीतर का हिस्सा समझता है और खेल के रोमांच को पल-पल महसूस करता है। दुनिया के किसी कोने से किसी दोस्त के साथ, किसी अजनबी के साथ, इन खेलों को खेला जा सकता है यानी आज की डिजिटल लाइफ के अनुरूप ये

पहल इन डिजिटल गेम्स की शुरुआत: वर्ष 1962 की बात है, एमआईटी यानी मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, अमेरिका में दो युवाओं ने मिलकर दुनिया का पहला डिजिटल गेम स्पेस वार बनाया। स्टीव रसेल और उनके दोस्त मार्टिन ब्रेटज़न ने पहले-पहले इन डिजिटल गेम्स की अवधारणा को 1961 में रखा था। लेकिन बाद के एक साल में उनके साथ उनके चार और दोस्त आ जुड़े, ये थे- वेन विटानन, पीटर सेमसन, डेन एडवर्ड्स और एलन कोटाक। इन सभी ने मिलकर दुनिया का पहला डिजिटल गेम्स स्पेस वार सीडीपी-1 कंप्यूटर पर बनाया यहाँ से आधुनिक



वीडियो गेम उद्योग की शुरुआत हुई। जहाँ तक भारत में डिजिटल गेमिंग की शुरुआत का सवाल है तो यह सन 1990 के दशक में आया, जब कंप्यूटर और इंटरनेट की धीरे-धीरे आम लोगों तक पहुँचने लगे थे। भारत का पहला स्वदेशी डिजिटल गेम 'भारत: द गेम' (1998) माना जाता है, जिसे सिनका गेम्स कंपनी ने विकसित किया था। हालाँकि गेम बहुत अधिक लोकप्रिय नहीं हुआ। **डिजिटल गेम्स का भविष्य:** जहाँ तक डिजिटल गेम्स की दुनिया के भविष्य का सवाल है तो यह बेहद उज्ज्वल और तकनीकी रूप से बेहद रोमांचक है। साल 2025 में वैश्विक गेमिंग इंडस्ट्री बढ़कर 250 अरब अमेरिकी डॉलर की हो चुकी है और इसमें बहुत बड़ा हिस्सा भारत के डिजिटल गेम्स प्रेमियों का भी है। क्योंकि साल 2024 के अंत तक भारत में सक्रिय गेम्स की संख्या बढ़कर 40 करोड़ हो चुकी है। शायद यह डिजिटल गेमिंग का ही विस्तार है कि आज ई-स्पॉट्स की दुनिया बड़े पैमाने पर उभरी है और लाखों लोग इसे अपना करियर बनाकर अपना भविष्य आर्थिक रूप से सुरक्षित कर रहे हैं। *

दरवाजा

असाइनमेंट पूरा कर रहा हूँ। आप डिस्टर्ब मत करिए। 'ठीक है बेटा, कितना समय लगेगा, इसे पूरा करने में?' दादाजी ने बड़े प्यार से पूछा। 'दादाजी मैं अभी कैसे बता दूँ, आप डिस्टर्ब मत कीजिए प्लीज।' परेश ने तेज स्वर में बोला। 'ठीक है बेटा, मैं नीचे तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ।' यह कहकर दादाजी ने कमरे से बाहर निकलते समय पलटकर देखा, परेश अपने मोबाइल में लगा दिखाने में व्यस्त था। दादाजी के कमरे से निकलते ही परेश ने अपने कमरे का दरवाजा तेज आवाज के साथ बंद कर दिया। दादाजी कुछ देर दरवाजे के पास भाव शून्य खड़े रहे। उनकी आंखों में एक नमी उतर आई थी। *

आपके दरवाजे पर नहीं, आपकी जेब में बैठा है। इधर मेरा मोबाइल ही मेरा पूरा जीवन समझता है- कब रिचार्ज खत्म होगा? कब बीमा एक्सपायर होगा? कब कार की सर्विसिंग करानी है? कब पुरानी कार बेचे चार साल हो गए? यह सब याद दिला रहा है। सच कहूँ तो मोबाइल ने आदमी को अकेला किया, या अकेलापन आदमी को मोबाइल तक ले गया, ये तफरीक अब मैं भी नहीं कर पाता। मोबाइल पर आध्यात्मिक गुरुओं के संदेश, प्रेरक कथन और भविष्यवाणियाँ भी तड़तड़ आ रहे हैं। सुबह-सुबह इतनी 'ज्ञान-वर्षा' कि दिमाग की हार्ड डिस्क फुल होकर ओवरहीट हो जाए। पर सही कहूँ, रेलवे की लाइनें और मोबाइल दोनों ही हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की लाइफलाइन हैं। एक में लगकर देश चलता है और दूसरे में खोकर आदमी। इतने में मेरी लाइन भी दो-चार इंच आगे बढ़ गई। शायद मेरे नंबर का भी समय आ रहा था और मोबाइल पर एक नया मैसेज की जंम

दरवाजा

असाइनमेंट पूरा कर रहा हूँ। आप डिस्टर्ब मत करिए। 'ठीक है बेटा, कितना समय लगेगा, इसे पूरा करने में?' दादाजी ने बड़े प्यार से पूछा। 'दादाजी मैं अभी कैसे बता दूँ, आप डिस्टर्ब मत कीजिए प्लीज।' परेश ने तेज स्वर में बोला। 'ठीक है बेटा, मैं नीचे तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ।' यह कहकर दादाजी ने कमरे से बाहर निकलते समय पलटकर देखा, परेश अपने मोबाइल में लगा दिखाने में व्यस्त था। दादाजी के कमरे से निकलते ही परेश ने अपने कमरे का दरवाजा तेज आवाज के साथ बंद कर दिया। दादाजी कुछ देर दरवाजे के पास भाव शून्य खड़े रहे। उनकी आंखों में एक नमी उतर आई थी। *

आपके दरवाजे पर नहीं, आपकी जेब में बैठा है। इधर मेरा मोबाइल ही मेरा पूरा जीवन समझता है- कब रिचार्ज खत्म होगा? कब बीमा एक्सपायर होगा? कब कार की सर्विसिंग करानी है? कब पुरानी कार बेचे चार साल हो गए? यह सब याद दिला रहा है। सच कहूँ तो मोबाइल ने आदमी को अकेला किया, या अकेलापन आदमी को मोबाइल तक ले गया, ये तफरीक अब मैं भी नहीं कर पाता। मोबाइल पर आध्यात्मिक गुरुओं के संदेश, प्रेरक कथन और भविष्यवाणियाँ भी तड़तड़ आ रहे हैं। सुबह-सुबह इतनी 'ज्ञान-वर्षा' कि दिमाग की हार्ड डिस्क फुल होकर ओवरहीट हो जाए। पर सही कहूँ, रेलवे की लाइनें और मोबाइल दोनों ही हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की लाइफलाइन हैं। एक में लगकर देश चलता है और दूसरे में खोकर आदमी। इतने में मेरी लाइन भी दो-चार इंच आगे बढ़ गई। शायद मेरे नंबर का भी समय आ रहा था और मोबाइल पर एक नया मैसेज की जंम

दरवाजा

असाइनमेंट पूरा कर रहा हूँ। आप डिस्टर्ब मत करिए। 'ठीक है बेटा, कितना समय लगेगा, इसे पूरा करने में?' दादाजी ने बड़े प्यार से पूछा। 'दादाजी मैं अभी कैसे बता दूँ, आप डिस्टर्ब मत कीजिए प्लीज।' परेश ने तेज स्वर में बोला। 'ठीक है बेटा, मैं नीचे तुम्हारा इंतजार कर रहा हूँ।' यह कहकर दादाजी ने कमरे से बाहर निकलते समय पलटकर देखा, परेश अपने मोबाइल में लगा दिखाने में व्यस्त था। दादाजी के कमरे से निकलते ही परेश ने अपने कमरे का दरवाजा तेज आवाज के साथ बंद कर दिया। दादाजी कुछ देर दरवाजे के पास भाव शून्य खड़े रहे। उनकी आंखों में एक नमी उतर आई थी। *

आपके दरवाजे पर नहीं, आपकी जेब में बैठा है। इधर मेरा मोबाइल ही मेरा पूरा जीवन समझता है- कब रिचार्ज खत्म होगा? कब बीमा एक्सपायर होगा? कब कार की सर्विसिंग करानी है? कब पुरानी कार बेचे चार साल हो गए? यह सब याद दिला रहा है। सच कहूँ तो मोबाइल ने आदमी को अकेला किया, या अकेलापन आदमी को मोबाइल तक ले गया, ये तफरीक अब मैं भी नहीं कर पाता। मोबाइल पर आध्यात्मिक गुरुओं के संदेश, प्रेरक कथन और भविष्यवाणियाँ भी तड़तड़ आ रहे हैं। सुबह-सुबह इतनी 'ज्ञान-वर्षा' कि दिमाग की हार्ड डिस्क फुल होकर ओवरहीट हो जाए। पर सही कहूँ, रेलवे की लाइनें और मोबाइल दोनों ही हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की लाइफलाइन हैं। एक में लगकर देश चलता है और दूसरे में खोकर आदमी। इतने में मेरी लाइन भी दो-चार इंच आगे बढ़ गई। शायद मेरे नंबर का भी समय आ रहा था और मोबाइल पर एक नया मैसेज की जंम

आपके दरवाजे पर नहीं, आपकी जेब में बैठा है। इधर मेरा मोबाइल ही मेरा पूरा जीवन समझता है- कब रिचार्ज खत्म होगा? कब बीमा एक्सपायर होगा? कब कार की सर्विसिंग करानी है? कब पुरानी कार बेचे चार साल हो गए? यह सब याद दिला रहा है। सच कहूँ तो मोबाइल ने आदमी को अकेला किया, या अकेलापन आदमी को मोबाइल तक ले गया, ये तफरीक अब मैं भी नहीं कर पाता। मोबाइल पर आध्यात्मिक गुरुओं के संदेश, प्रेरक कथन और भविष्यवाणियाँ भी तड़तड़ आ रहे हैं। सुबह-सुबह इतनी 'ज्ञान-वर्षा' कि दिमाग की हार्ड डिस्क फुल होकर ओवरहीट हो जाए। पर सही कहूँ, रेलवे की लाइनें और मोबाइल दोनों ही हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था की लाइफलाइन हैं। एक में लगकर देश चलता है और दूसरे में खोकर आदमी। इतने में मेरी लाइन भी दो-चार इंच आगे बढ़ गई। शायद मेरे नंबर का भी समय आ रहा था और मोबाइल पर एक नया मैसेज की जंम

अगर आपको गांव की खूबसूरती, वहां का प्राकृतिक वातावरण लुभाता है, साथ ही पक्षी प्रेमी भी हैं तो आपको इस मौसम में 'भारत का पक्षी गांव' के नाम से प्रसिद्ध मेनार गांव जरूर जाना चाहिए। किस तरह से मेनार गांव, पक्षी-प्रकृति संरक्षण की मिसाल बन गया है, वहां से लौटकर बता रहे हैं लेखक अपनी जुबानी।



पक्षी संरक्षण की मिसाल मेनार गांव

पर्यटन स्थल

समीर चौधरी

हाल ही में मैं उदयपुर घूमने गया था। जब मुझे स्थानीय लोगों से पक्षी संरक्षण के लिए मशहूर मेनार गांव के बारे में पता चला तो खुद को रोक नहीं पाया। राजस्थान के खूबसूरत शहर उदयपुर के नजदीक स्थित मेनार गांव में मैं बिना किसी अनुसंधान के बिल्कुल सुबह पहुंच गया था। सुबह होते ही मेनार में चिड़ियों का चहचहाना हर ओर से सुनाई पड़ने लगता है। खासतौर पर मानसून के बाद सर्दी के मौसम की शुरुआत होने पर यह नजारा बहुत मनभावना लगता है, जब दूर देशों से बड़ी संख्या में पक्षी जाड़ों के अपने इस आवास में लौटने लगते हैं। दशकों से मेनार 100 से अधिक स्थानीय और उठे इलाकों से पलायन करके आने वाले पक्षियों का अभयारण्य बना हुआ है। यहां आने वाले प्रमुख पक्षियों में फ्लेमिंगो,



पेलिकन, कूटस और लुप्त होने की कगार पर पहुंच चुका सारस क्रेन भी शामिल हैं। इन्हें देखने के लिए दूर-दूर से पक्षी प्रेमी यहां आते हैं। ग्रामीणों की भूमिका महत्वपूर्ण: मेनार गांव की विशेषता केवल इसकी जैव-विविधता ही नहीं है बल्कि यहां के लोग भी हैं, जिनकी वजह से पक्षी संरक्षण संभव हो सका है। मेनार के लोगों का यहां आने वाले महान पक्षियों से लगाव का सिलसिला लगभग दो शताब्दों पहले आरंभ हुआ था। मुझे स्थानीय लोगों ने ही बताया कि वर्ष 1832 में यहां की एक झील के किनारे किसी ब्रिटिश अधिकारी ने एक पक्षी को गोली मार दी थी। उससे नाराज ग्रामीणों ने तुरंत ही उस ब्रिटिश व्यक्ति को गांव से बाहर जाने पर मजबूर कर दिया। यह कहानी लोककथा बन गई और इसी ने मेनार के पक्षी प्रेम और संरक्षण की आधारशिला रखी। समय के साथ मेनार के लोगों ने अपने तालाबों (ब्रह्म तालाब, धंड तालाब और खरोडा तालाब) को जीवंत वेल्डेंड्स में बदल दिया। इनके प्रयास रंग लाए। मेनार को आधिकारिक तौर पर

राजस्थान के पहले पक्षी गांव के रूप में मान्यता मिल गई और उसे रामसर साइट (अंतरराष्ट्रीय महत्व का वेट लैंड, जो जीव संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है) घोषित किया गया। मेनार को वर्ष 2023 में भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांवों में भी शामिल किया गया।

राजस्थान के पहले पक्षी गांव के रूप में मान्यता मिल गई और उसे रामसर साइट (अंतरराष्ट्रीय महत्व का वेट लैंड, जो जीव संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है) घोषित किया गया। मेनार को वर्ष 2023 में भारत के सर्वश्रेष्ठ पर्यटन गांवों में भी शामिल किया गया।



नवासी: मेनार में पक्षियों को देखते हुए मेरी मुलाकात स्थानीय निवासी दर्शन मेनारिया से हुई, जो पक्षी-मित्र कहे जाते हैं। अपनी इस पहचान पर उन्हें गर्व है। हालांकि वह एक विद्यालय में अध्यापक झील के किनारों पर किया जाता है ताकि मानव और प्रकृति का संबंध मजबूत किया जा सके। यहां मछली पकड़ने और गर्मी में की जाने वाली खेती को स्थानीय लोगों ने अपनी इच्छा से बंद कर दिया है ताकि पक्षियों के ठहरने की जगहों को सुरक्षित रखा जा सके। झीलों से पानी भी बहुत कम निकाला जाता है। ग्रामीण अपनी जरूरतों के साथ पक्षियों की जरूरतों का भी पूरा ध्यान रखते हैं। सरकारी प्रयासों की बात करें, तो राजस्थान वन विभाग द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त पक्षी-मित्र हाथ में बाइोन्क्यूल्स (दूरबीन) लेकर सुबह-शाम को झीलों की निगरानी करते हैं। वे यहां आने वाले पक्षियों की गतिविधियों, पलायन पैटर्न को ऑब्जर्व करते हैं और खतरों की स्थिति में सावधान करते हैं। इस स्थानीय निगरानी ने न केवल सामान्य जलमृगियों को सुरक्षित रखने में मदद की है बल्कि उन प्रजातियों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिन पर लुप्त होने का खतरा मंडरा रहा है।



नदी गाथा

वीना गौतम

नदियां जीवनदायिनी होती हैं। नदियों के किनारे ही दुनिया की सभी सभ्यताएं और संस्कृतियां फली-फूली हैं। धरती पर नदियों के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। लेकिन जलवायु परिवर्तन, बढ़ती आबादी और नदियों के प्रति आम लोगों की उदासीनता के चलते धरती पर जल संकट तो गहराया ही है, अब नदियों के अस्तित्व पर भी संकट के बादल मंडरा रहे हैं। इसलिए नदियों का न केवल संरक्षण जरूरी है बल्कि हमें अपनी नई पीढ़ियों को इनके प्रति संवेदनशील भी बनाना जरूरी है ताकि इनका अस्तित्व बचा रहे और धरती पर इंसानी सभ्यता और संस्कृति भी हमेशा की तरह फलती-फूलती रहे। ऐसी ही एक महत्वपूर्ण और सुंदर नदी है, जम्मू शहर से होकर प्रवाहित होती है। जैसे किसी जीवंत शरीर में हृदय धड़कता है, वैसे ही जम्मू के लिए तवी की निरंतर बहती धारा है। यह नदी महज पानी की धार नहीं बल्कि जम्मू की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भावनात्मक पहचान का आधार स्तंभ है। स्थानीय डोगरा समाज में तवी को सूर्य पुत्री कहा जाता है यानी, एक ऐसी बेटे, जिससे सूर्य देव से जीवन मिला हो। यही उसकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व का आधार माना जाता है।



नदी का उद्भव और प्रवाह: तवी नदी शिवालिक पर्वतों की गोद से जन्मती है। सुप्रसिद्ध महादेव के निकट डोडा जिले के कै ला श कुं ड रलेशियर से इसका उद्गम माना जाता है। तवी के किनारे स्थित बाग-ए-बहू का मनोरम दृश्य 4,220 मीटर की ऊंचाई से उतरकर यह नदी 141 किलोमीटर का सफर तय करके अखनूर के पास चिनाब नदी में मिल जाती है। अपने प्रवाह में यह पहाड़ी पत्थरों, झाड़ियों, घास के मैदानों और घाटियों को चीरते हुए आगे बढ़ती है। तवी नदी का प्रवाह इसे एक युवा नदी के रूप में दर्शाता है। क्योंकि इसका प्रवाह तेज, पथरीला और जल स्वच्छ होता है। गर्मियों में चूंक हिमालय में बर्फ पिघलती है, इसलिए गर्मी के मौसम में इसमें पानी बढ़ जाता है, जबकि सर्दियों में नदी शांत और सक्रिय हो जाती है। इन दोनों मौसमों के विपरीत मानसून के आते ही तवी का शक्तिशाली और प्रचंड रूप देखने को मिलता है।

पौराणिक-धार्मिक महत्ता भी है बहुत: तवी का स्थान केवल भूगोल में ही महत्वपूर्ण नहीं है, पौराणिक आख्यानों और लोक-साहित्य में भी यह रची बसी है। सूर्य पुत्री कही जाने वाली तवी की मान्यता, डोगरा राजवंश के इतिहास की सांस्कृतिक धुरी मानी जाती है। जम्मू का प्रतिष्ठित

वैसे तो जम्मू-कश्मीर में कई मनोहारी झीलें और नदियां हैं। इन्हीं में से एक तवी नदी न केवल अपने प्रवाह सौंदर्य के लिए, अपनी धार्मिक-सांस्कृतिक महत्ता और अपनी गोद में समेटे जैव विविधता के लिए भी जानी जाती है।

महज जलधारा ही नहीं जम्मू की सांस्कृतिक आत्मा है तवी नदी



बहू-किला इसी नदी के किनारे स्थित है। इसी के किनारे स्थित बाग-ए-बहू बागीचा, महामाया मंदिर और उसके पास की घाटियां, तवी की सौंदर्य की देवी का दर्जा देती हैं। तवी की वजह से ही ये स्थल इस शहर की आकर्षक धरोहरों में शामिल हैं। प्राचीन मंदिरों, धार्मिक अनुष्ठानों में भी तवी नदी की भूमिका हमेशा रही है। डोगरा राज परिवार के संस्कार, पूजा-तीर्थ, अर्पण और पितृ श्रद्धा इसी नदी के तट पर संपन्न होती है। छठ पर्व, मकर संक्रांति, डोगरा मेलों और विशेष पूजा अर्चनाओं का केंद्र तवी नदी के तट ही होते हैं। शिवरात्रि में यहां विशेष उत्सव संपन्न होता है। डोगरी लोकगीतों में बार-बार तवी नदी का जिक्र आता है। यहां एक उक्ति बहुत प्रचलित है, 'तवी दे पाणियां वगं, सच्चे ने जम्मू दे लोग।' यानी तवी के पानी की तरह ही जम्मू के लोगों का मन भी निर्मल है। तवी जम्मू की आत्मा है। इसके रिवर फ्रंट, घाटों और हरित पट्टियों के माध्यम से यह नदी एक सांस्कृतिक स्थल के रूप में पुनर्जीवित हो रही है।



मौजूद है समृद्ध जैव विविधता: सिर्फ संस्कृति ही नहीं जम्मू क्षेत्र के पर्यावरण का भी मूल आधार तवी नदी ही है। इसकी घाटी में समृद्ध जैव विविधता पाई जाती है। देवदार, चीड़, शीशम, क्राप, पांपुलर तथा अनेक औषधीय पेड़ इसके

किनारे पनपते हैं और इसको समृद्ध वनस्पति स्थल बनाते हैं। इसी तरह तवी घाटी में हिमालयी लंगूर, पहाड़ी लोमड़ी, जंगली बिल्ली और काला भालू जैसे जीव जंतु भी पाए जाते हैं। इनके अलावा यहां किंग फिशर, उल्लू, बगुले, पहाड़ी गौरैया जैसे पक्षी इसकी जैव विविधता की गाथा कहते हैं। इसी में ट्राउट, महाशीर और क्रॉप जैसी मछलियों की भी उपस्थिति इसे खास बनाती है। कई तरह से है उपयोगी: तवी का तेज प्रवाह इसका पथरीला तल इसे देश की दूसरी नदियों की अपेक्षा बेहद स्वच्छ रखता है। यह चिनाब की प्रमुख सहायक नदी है और सिंध प्रणाली में जल उपलब्धता बढ़ाने पर अपना योगदान देती है। इसके तलों पर उगने वाली घास और वृक्ष, नदी के कटाव को रोकते हैं और जैविक स्थिरता बनाए रखते हैं। शहर के मध्य से गुजरते समय इसका घुमावदार प्रवाह बहुत आकर्षक लगता है। यह जम्मू शहर के पेय जल की प्रमुख स्रोत है। साथ ही इससे जम्मू, उधमपुर और अखनूर जिलों की कृषि भूमि सिंचित होती है। चुनौतियां हैं कई: हर नदी की तरह तवी के भी कुछ संकट हैं, जैसे शहर का बहने वाला नाला, कचरा और सीवेज इसे बीमार बनाता है। अवैध रेत खनन इसे घायल करता है और शहरीकरण का बढ़ता बोझ इसके विस्तार को छीनता जा रहा है, जो इसके जलस्तर में कमी का प्रमुख कारण बनाता है। तवी महज एक नदी नहीं बल्कि जम्मू की सांस्कृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक धरोहर है। इसे इतिहास की धड़कन और संस्कृति की आत्मा कहते हैं। जम्मू शहर की इस पहचान को संरक्षित किया जाना बहुत आवश्यक है। *



अखनूर फोर्ट के पास से प्रवाहमान तवी नदी जा रहा है, जो इसके जलस्तर में कमी का प्रमुख कारण बनाता है। तवी महज एक नदी नहीं बल्कि जम्मू की सांस्कृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक धरोहर है। इसे इतिहास की धड़कन और संस्कृति की आत्मा कहते हैं। जम्मू शहर की इस पहचान को संरक्षित किया जाना बहुत आवश्यक है। *

जब करें घने कोहरे में ड्राइविंग रखें इन बातों का खास ध्यान

सर्दी के मौसम में जब घना कोहरा छाया हो, तो विजिबिलिटी बहुत कम हो जाती है। ऐसे में ड्राइविंग बेहद चुनौतीपूर्ण हो जाता है। थोड़ी सावधानी और कुछ जरूरी बातों का ध्यान रखकर आप धुंध वाले मौसम में भी सेफ ड्राइव कर सकते हैं।

सजगता

विवेक कुमार

हालांकि अभी बहुत अधिक ठंड नहीं हो रही है लेकिन आने वाले दिनों में इसमें इजाफा होगा। हाड़ कंपा देने वाली भीषण ठंड और घने कोहरे में वाहन चलाना बहुत चुनौती भरा काम होता है। देर रात में या पौ फटने से पहले सुबह के समय कोहरे के कारण जब विजिबिलिटी का स्तर कम हो जाता है, तब ड्राइविंग करना और मुश्किल होता है। ऐसे में अगर आपके लिए कहीं जाना बेहद जरूरी है और आप अपने वाहन से जा रहे हैं, तो घने कोहरे में सुरक्षित सफर के लिए कुछ बातों का ध्यान रखें। ड्राइविंग पर फोकस रहें: ड्राइविंग करते समय मोबाइल फोन पर किसी से बात करना, बगल में या पीछे सीट पर बैठे व्यक्ति के साथ लगातार बात करना, म्यूजिक सुनना, इन



तमाम कामों से आपका फोकस ड्राइविंग से हट सकता है। घने कोहरे में अगर आप ड्राइविंग कर रहे हैं तो आपका ध्यान पूरी तरह ड्राइविंग पर ही केंद्रित रहना चाहिए। सामान्य दिनों में भी इस तरह की सावधानी बरतनी चाहिए। स्पीड कम रखें: कोहरे में गाड़ी बहुत धीमी गति में चलानी चाहिए। इससे दुर्घटना होने की आशंका तो कम होती ही है, किसी भी तरह की दुर्घटना होने पर नुकसान ज्यादा नहीं होता है। अपने आगे चलने वाले वाहन के बीच पर्याप्त गैप रखते हुए धीरे-धीरे ड्राइव करें। इससे आपको अचानक ब्रेक लगाने या गति बदलने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। कोहरे में गाड़ी ड्राइव करते समय अचानक अपनी लेन बदलने से भी बचें, क्योंकि विजिबिलिटी कम होने के कारण आपकी गाड़ी की गति और दिशा का अनुमान पीछे से आने वाले दूसरे वाहन का चालक नहीं लगा पाता है, इससे एक्सीडेंट की संभावना होती है। सावधानी से गाड़ी मोड़ें: अगर आपको किसी मोड़ पर अपनी गाड़ी मोड़नी है तो अपनी गाड़ी की गति पहले से ही धीमी कर लें, क्योंकि कोहरे में बिल्कुल करीब की भी चीज दिखाई नहीं देती है। ऐसे में अगर गाड़ी मोड़ते समय गति तेज

हुई तो दुर्घटना होने का उर रहता है। धुंध में ओवरटेकिंग करना बहुत खतरनाक हो सकता है, क्योंकि विजिबिलिटी बहुत कम होने से यह नहीं दिख पाता है कि आगे कोई वाहन है या नहीं और उसकी स्पीड कितनी है? इसलिए कोहरे में यथासंभव गाड़ी धीमे चलाएं और ओवर टेकिंग करने से बचें। वाहन को रोक दें: यदि विजिबिलिटी बहुत ही कम हो, तो सड़क के किनारे सुरक्षित जगह पर गाड़ी को रोक कर थोड़ा कोहरा छंटने का इंतजार करना चाहिए। अपनी गाड़ी को जब सड़क पर किनारे खड़ा करें तो कार की हैजाई लाइट चालू रखें ताकि सड़क पर चलने वाले दूसरे वाहन आपकी कार को देख सकें और सुरक्षित तरीके से बगल से निकल जाएं। विंडोज-विंड स्क्रीन को साफ रखें: घने कोहरे और ओस की बूंदों के कारण विंडोज और विंड स्क्रीन पर लगा सीसा बार-बार धुंधला हो जाता है। ऐसे में विजिबिलिटी और भी कम हो जाती है। इससे बचने के लिए बीच-बीच में वाइपर चलाते रहें। कार के हीटर ऑन कर वाहन के अंदर से ही इन



पर जमने वाली भाप को कम किया जा सकता है। अधिक दिक्कत होने पर गाड़ी से उतर कर साफ कपड़े से इन्हें साफ करना चाहिए। रेट्रो रिफ्लेक्टर टेप लगवाएं: अपनी कार के पीछे लाल रेट्रो रिफ्लेक्टर टेप लगवाने से आपके पीछे चलने वाले वाहन को आपके वाहन की स्थिति पता चलती रहती है। इससे दोनों की सुरक्षा सुनिश्चित होती है और दुर्घटना की आशंका से भी बचा जा सकता है। *

बड़ा पद

हेमंत पाल

भारतीय सिनेमा में यथार्थवाद की झलक बहुत पुरानी बात है। ऐसी फिल्मों की नींव सन 1920 से 30 के दशक में ही पड़ गई थी, जब 1925 में बाबूराव पेंटर ने अपनी मूक फिल्म 'सावकारी पाश' बनाई, जिसमें ही. शांताराम ने गरीब किसान का किरदार निभाया था। वह किसान अपनी जमीन एक साहूकार को देने के लिए मजबूर हो जाता है और गांव छोड़कर शहर में मिल मजदूर बन जाता है। इसे भारत की पहली समानांतर सिनेमा माना जाता है। साल 1937 में महिलाओं की दुर्दशा पर बनी फिल्म 'दुनिया ना माने' को भी समानांतर सिनेमा की श्रेणी में ही रखा जाता है। समानांतर सिनेमा यानी पैरेलल सिनेमा को 'आर्ट सिनेमा' या 'नया सिनेमा' के नाम से भी जाना जाता है। माना जाता है कि हमारा समानांतर सिनेमा इटैलियन न्यू रियलिज्म, फ्रांस के फ्रेंच न्यू वेव और जापान के न्यू वेव सिनेमा से प्रभावित रहा है। समानांतर सिनेमा ने ली नई करवट: शुरुआती 1920-30 के दशक में भले ही समानांतर सिनेमा बनाने के कुछ प्रयोग किए गए, लेकिन तब ये परंपरा कुछ खास आगे नहीं बढ़ सकी। सन 1940 से 1960 के दशक में समानांतर सिनेमा ने फिर से करवट ली। इस दौर में सत्यजीत रे, ऋत्विच घटक, बिमल राय, मृगाल सेन, ख्वाजा अहमद अब्बास, चेतन आनंद, वी. शांताराम जैसे दिग्गज फिल्मकारों ने इसे लोकप्रिय किया। इनकी फिल्मों पर साहित्य की गहरी छाप देखने को मिलती है। चेतन आनंद ने 1946 में 'नीचा नगर' जैसी बेहतरीन फिल्म बनाई। कान फिल्म फेस्टिवल में इस फिल्म को 'ग्रांड प्रिक्स डू फेस्टिवल' पुरस्कार मिला। इस तरह कान फिल्म फेस्टिवल में पुरस्कार पाने वाली पहली भारतीय फिल्म बनी- 'नीचा नगर'। समानांतर फिल्मों को इस परंपरा को श्याम बेनेगल, गोविंद निहलानी, अदूर गोपालकृष्णन, गिरीश कासरवल्ली, मृगाल सेन, ऋत्विच घटक जैसे फिल्मकारों ने आगे बढ़ाया। दिखता है जीवन का यथार्थ: समानांतर सिनेमा में जीवन और समाज का यथार्थ बहुत गहराई से दिखाया जाता रहा है। यह हिंदी सिनेमा का वह पक्ष है, जिसमें आम आदमी के जीवन की जद्दोजहद, सामाजिक असमानता और बदलाव को दर्शाया जाता है। फिल्मों के कथानक में यथार्थ को पूरी शिद्दत के साथ प्रस्तुत करने का यह चलन 1950 के दशक में पश्चिम बंगाल से शुरू हुआ और बाद में इसे हिंदी समेत हर भाषा के सिनेमा ने अपनाया। इसका मकसद जीवन के



श्याम बेनेगल की 'अंकुर' में दिखा जीवन यथार्थ

जीवन-समाज की सच्चाई दिखाया यथार्थपरक समानांतर सिनेमा

फिल्म निर्माण के शुरुआती दिनों से ही फिल्मकारों ने जीवन और सामाजिक यथार्थ को अपनी फिल्मों का विषय बनाना शुरू कर दिया था। हालांकि यह सामाजिक यथार्थ, पैरेलल सिनेमा में देखने को मिलता है। समानांतर सिनेमा को समृद्ध करने वाले फिल्मकारों और हिंदी सिनेमा में इस ट्रेड पर एक नजर।

कठोर यथार्थ, समाज के हाशिए पर खड़े वर्गों, दलितों, महिलाओं और गरीबों की समस्याओं को दर्शकों के सामने लाना रहा, जिससे दर्शक खुद को जुड़ा महसूस करे। इन फिल्मों की यथार्थ परक कहानियां, आम लोगों की सामाजिक और आर्थिक जिंदगी से जुड़ी होती हैं। गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, शहरी-ग्रामीण भेद, आर्थिक विषमताएं, जातिगत भेदभाव, स्त्री-पुरुष संबंध, नारी सशक्तिकरण जैसे मुद्दे समानांतर सिनेमा की पहचान रहे हैं। ये फिल्में पारंपरिक सिनेमा की तरह मनोरंजन या सपनों की दुनिया पर नहीं, बल्कि समाज की सच्चाइयों को विषय वस्तु बनाकर, बदलाव और सवाल उठाए जाने पर बल देती हैं। समानांतर सिनेमा का मकसद दर्शक को यथार्थ के करीब लाना और सांस्कृतिक-सामाजिक बदलाव की चेतना को जगाना रहा है। ये फिल्में भारतीय समाज के आइने का काम करती हैं। दिखाई जाती है सामाजिक त्रासदी: समानांतर सिनेमा को जीवन का यथार्थ कहा जरूर जाता है, लेकिन यह आधा सच ही है। क्योंकि समानांतर सिनेमा का कैमरा हमेशा दमित और शोषित वर्ग पर ही फोकस होता रहा है। जबकि सिर्फ दमन और शोषण ही समाज का यथार्थ नहीं है। समाज के यथार्थ में खुशी और गम दोनों शामिल होते हैं। केवल त्रासदी और नकारात्मकता को ही समाज का यथार्थ नहीं माना जा सकता। यदि समाज के यथार्थ में जीवन



कालजयी फिल्म माना जाता है। अमेरिका की 'टाइम' पत्रिका ने इसे 'ऑल टाइम बेस्ट 100 फिल्म' में जगह दी है। समानांतर सिनेमा की नई शुरुआत 1969 में मृगाल सेन की फिल्म 'धुवन सोम' से माना जाता है। ऐसे ही श्याम बेनेगल 1973 में 'अंकुर' बनाकर समानांतर सिनेमा के प्रमुख हस्ताक्षर बने। सन 1976 में मृगाल सेन ने 'मृगया' बनाई, जो मिथुन चक्रवर्ती की पहली फिल्म थी। श्याम बेनेगल की फिल्म 'अंकुर', 'मंथन' और 'भूमिका', मणि कौल की 'उसकी रोटी' और 'दुविधा', सत्यजीत रे की 'पाथर पांचाली', शतरंज के खिलाड़ी, 'सद्गति'। इन सभी फिल्म मेकर्स का समानांतर सिनेमा को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। *